ISSN 2277-7660

वर्ष : 66 अंक : 7 जुलाई 2015

अमर ज्योति

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक,
सामाजिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

व्यवस्थापक
प्रमोद कुमार ऐचरा

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 08059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
info@amarjyotipatrika.com
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित व्यवस्थापक के अतिरिक्त सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क
वार्षिक सदस्यता : ₹ 70
आजीवन सदस्यता : ₹ 700

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सम्पादकीय	3
सबद-43	4
केशोजी कृत अवतार की साखी	5
गुरु जाम्भोजी एवं सनातन धर्म	7
भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण	11
बिश्नोई पंथ का महापुराण- 'जम्भसार'	14
अथर्ववेद में पर्यावरण संरक्षण हेतु मानवीय गुण	17
बधाई सन्देश	19
भगवान कृष्ण के तीन रूप	20
संसदीय लोकतन्त्र और पर्यावरण का प्रश्न	22
सफल जीवन, कर्मफल	26
पर्यावरण मंत्री को बिश्नोई समाज द्वारा दिया गया निवेदन पत्र	27
सामाजिक हलचल- विराट साप्ताहिक जाम्भाणी हरिकथा...	29
रक्तदान शिविर आयोजित, पुस्तक विमोचन कार्यक्रम सम्पन्न	31
शहीद हुए 363 बिश्नोइयों की स्मृति में खेजड़ली में बनेगा भव्य स्मारक: प्रकाश जावड़ेकर	32
राष्ट्रीय जाम्भाणी संस्कार शिविर सम्पन्न	33

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सम्पादकीय

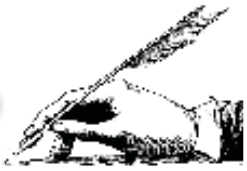

जीवन की सार्थकता

मनुष्य तन प्राप्त करने की सार्थकता और जीवन के चरम लक्ष्य को लेकर सभी धर्म ग्रंथों व शास्त्रों में विशद् विचार-चर्चा हुई है। क्या मनुष्य केवल अन्य जीवों की भांति एक सामान्य जीव ही है, जो खाये-पीये, वंश वृद्धि करे और इस संसार से चला जाए? या मनुष्य जीवन प्राप्त करना कोई विशेष उपलब्धी व अवसर है, जिसका सदुपयोग करके यह जीवात्मा कोई उच्च स्थान प्राप्त कर सकती है। क्या भौतिक साधनों की प्राप्ति और उनका उपयोग बिल्कुल त्याज्य है? इन सब प्रश्नों पर विचार करके ही मनुष्य जीवन की सार्थकता पर विचार हो सकता है।

इसमें तो कोई संदेह नहीं कि जीव विज्ञान की दृष्टि से मनुष्य भी अन्य प्राणियों की भांति एक प्राणी है, जिसमें बुद्धि रूपी तत्त्व अन्य प्राणियों से अधिक विकसित है। जब मनुष्य एक प्राणी है तो एक प्राणी सुलभ क्रिया-कलाप उसके लिए स्वाभाविक बात है। उसे सुसभ्य ढंग से जीवनयापन करने के लिए भौतिक सुविधाओं की भी आवश्यकता पड़ती है, जिसके लिए उसे भौतिक सामग्री भी जुटानी पड़ती है। यहां तक तो बात ठीक है कि वह जीवित रहने के लिए आवश्यक साधन जुटाए परन्तु समस्या तब उत्पन्न होती है जब वह इन भौतिक साधनों की प्राप्ति को ही जीवन का चरम लक्ष्य बना लेता है। इस स्थिति में मनुष्य सांसारिक भूल भुलैया के भंवर जाल में ऐसा फंसता है कि उसे फिर बाहर निकलने का द्वार मिलता ही नहीं और जीवन निरर्थक ही चला जाता है। केवल भौतिक को ही जीवन का सार्थकता मानने वाला मनुष्य अन्य प्राणियों की भांति ही एक सामान्य प्राणी होता है।

धर्मशास्त्रों में ऐसा माना गया है कि मनुष्य जीवन के रूप में जीवात्मा को मोक्ष प्राप्त करने का एक अवसर मिलता है, क्योंकि मोक्ष प्राप्त करने का एक मात्र उपाय भगवद्भक्ति होता है, जिसे केवल मनुष्य ही कर सकता है, अन्य प्राणी नहीं। आहार, नींद व वंशवृद्धि आदि सभी कार्य तो अन्य प्राणी भी करते हैं, फिर मनुष्य और अन्य प्राणियों में अंतर क्या हुआ? यदि मनुष्य समर्पण भाव से विष्णु का भजन करके अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है तो उसका आवागमन का चक्कर छूट जाता है और मनुष्य तन धारण करना सार्थक हो जाता है। गुरु जम्भेश्वर जी ने भी कहा है कि 'विष्णु अजंप्या जन्म अकारथ' अर्थात् विष्णु भजन के बिना जीवन व्यर्थ है। हमारे द्वारा संग्रहित सभी भौतिक पदार्थ यहीं रह जाते हैं और साथ चलता है केवल विष्णु का नाम। यदि उसका स्मरण किया है तो वह साथ चलेगा, अन्यथा गुरु महाराज ने कहा है- 'आतो काया ले आयो थो जातो सूको जागो' अर्थात् इस संसार में आते समय तो हम शरीर साथ लेकर आए थे पर जाते समय तो बिल्कुल खाली हाथ ही जाना पड़ेगा।

सबद–43

दोहा–

जोगी कहै देवजी, हमारा जोग अपार।

जोग निधी हमने लई, यांका सुणों विचार।

फिर लोहा पांगल कहने लगा कि हे देवजी! हमारा अपार योग है हम ऐसे वैसे नाम मात्र के योगी नहीं है। मुझे तो सिद्धि प्राप्त हो चुकी है। अन्य लोग भी प्राप्त करने में तत्पर है। जाम्भोजी ने उन्हीं के प्रति पुन: सबद सुनाया–

सबद–43

ओ३म् ज्यूं राज गये राजिन्दर झूरै, खोज गऐ न खोजी।

लाछ मुई गिरहायत झूरै, अरथ बिहूणां लोगी।

मोर झड़ै कृषाण भी झूरै, बिंद गये न जोगी।

भावार्थ– जिस प्रकार से राजा का राज्य हाथ से चला जाता है तो वह अति दु:खी होता है। खोजी यानि पारखी का खोज नष्ट हो जाये तो वह अपने कार्य में विफल हो जाता है और दु:खी होकर विलाप करता है। गृहस्थ पुरुष की गृहिणी युवती पत्नी मर जाती है तो भारी कष्टों को झेलना पड़ता है। इस संसार के लोगों का तो यहां धन नष्ट हो जाता है या किसी प्रकार की हानि हो जाती है तो उन्हें भी रोना पड़ता है। किसान की खेती में जब फल आने की तैयारी के समय मोर, फूल मंजरी तूफान आदि से झड़ जाती है, तो उसे भी झुरता देखा गया है और योग साधना में रत योगी का ब्रह्मचर्य नष्ट हो जाता है तो वह भी निस्तेज हो जाता है। उसे उदासी आ जाती है। उसी प्रकार से हे लोहा पांगल! तुझे भी अपने योग रहित जीवन को देखकर रोना–पछतावा करना चाहिये था। किन्तु तुम लोग सिद्ध नहीं होते हुए भी अपनी कमजोरी के ऊपर पर्दा डाल कर हंसने का नाटक कर रहे हो। तुम्हारे जीवन में सच्चाई नहीं है क्योंकि तुम्हारा जीवन योगी जैसा प्रफुल्लित नहीं है। तुम्हारी चिंताओं ने तुम्हें जर्जरित कर दिया है इसको छिपाने के लिये तुमने राख लगा रखी है।

जोगी जंगम जपिया तपिया, जती तपी तक पीरूं।

जिहिं तुल भूला पाहण तोलै, तिहि तुल तोलत हीरूं।

योग साधना करने वाले योगी, भ्रमणशील सन्यासी, जंगम, जप करने वाले जपिया, तपस्या करने वाले तपियां, तकिये में रहने वाले मुसलमान फकीर, इन्हीं सभी ने यह भेष नाम, साधना रूपी तराजूं ले रखी है। इस तराजू से हीरा तोलना चाहिये था, हीरों का व्यापार करना था। परमानन्द की प्राप्ति करनी थी, किन्तु ये लोग इस तरह से पत्थर तोल रहे हैं ये लोग सांसारिक भोग पदार्थों में लिप्त होकर उन्हीं का आचार–विचार अपनाते हैं इन लोगों ने इस अमूल्य तराजू का दुरुपयोग किया है। इसलिये इनसे वापिस ले लेनी चाहिये।

जोगी सो तो जुग जुग जोगी, अब भी जोगी सोई।

यदि वास्तव में कोई योगी होगा तो युगों–युगों से योगी ही रहा है। वह अब भी योगी ही है और भविष्य में भी योगी ही रहेगा अर्थात् एक बार कोई योगी परम तत्त्व का साक्षात्कार कर लेता है तो वह सदा ही उसी में ही लीन हो जाता है फिर कभी भी उसकी वृति बाह्य विषयाकार नहीं होती है और वह काल को भी जीत लेता है। इसलिये दीघार्यु होता है किन्तु तुम लोग अपने को इस जर्जरित अवस्था में भी योगी कैसे कहते हो।

थे कान चिरावों, चिरघट पहरो, आयसां यह पाखण्ड तो जोग न कोई।

जटा बधारों जीव सिंघारो, आयसां इहि पाखण्ड तो जोग न होई।

और आप लोग तो कान चिराके यानि छेद करवाके उसमें मुद्रा पहनते हो और उसी के बल पर अपने को योगी कहते हो। हे आयस्! यह पाखण्ड तो योग नहीं हो सकता। यदि आप लोग जटा बढ़ा कर अपने को योगी कहते हो और जीव हत्या करते हो तो हे आयस्! यह भी पाखण्ड ही है। इस पाखण्ड से योग की सिद्धि नहीं हो सकती और न ही योगी कहलाने के अधिकारी ही हो सकते हो।

– साभार 'जंभसागर'

केशो जी कृत अवतार की साखी

बाबै आप लियो अवतार, श्याम सम्भराथल आवियो।
आवियो छै आप अलेख, भाग परापति पावियो।
भाग परापति पावियो नै, मनो ज त्यागो मांण।
अन्हो अजाण अबूझ मूरख, किया श्याम सुजाण।
कुमल कुलक्षण पर हरया, सुघ हुवा करणी सार।
भगवै बाने विसन, आयो आप लियो अवतार।
श्याम सम्भराथल आवियो।1।

धुर ओलख जे आचार, परमेश्वर पूरो धणी।
ठग पासी गर चोर, जीव दया पाले घणी।
जीव दया पाले घणी नै, हते जीव न जाण।
मेघा देघा अहेड़िया, घर पीजिये जल छांण।
बकर कसाई झींवरा, मुखां ज त्यागी मार।
मध्यम ते उतम किया, धुर ओलख जे आचार।
परमेश्वर पूरो धणी।2।

मीर मुलक सुलतांण, पीर पुरूष पांय पड़े।
पापां पड़ै भगाण, गुरु भेट्या पातक झड़ै।
झड़ै पातक सकल मनसा, सही सिरजण हार।
आप स्वयंभू आवियो, गुरु तरण तारण हार।
सूत पुराण कुराण पर हरो, करो विसन बखाण।
पवन छतीसों पायें लागे, मीर मुलक सुलतांण।
पीर पुरुष पांये पड़े।3।

रायक आण्या राहि, गुरु फुरमाई से करे।
बोले वचन विचार, मुख सुर बांणी ओचरे।
मुख सुर बांणी ओचरे नै, बोले वचन विचार।
फूल पीतल झालरा नै, नील त्यागे नार।
हरि होम कीजै पाहल लीजै, परस लागे पांय।
कलिकाल संभाल सतगुरु, रायक आण्या राय।
गुरु फुरमाई से करे।4।

म्हारी आवागवण निवार, इण टाणे सूं मत टालियो।
अब लीजो अपणाय, छाप पुरबली पालियो।
छाप पूरबली पालियो थे, जम्भगुरु जगनाथ।

पांच सात नव करोड़ बारा, दिया सतगुरु साथ।
हरि हेत कीजै दरश दीजै, पार घर पहुंचाय।
दास केशो आस थारी, आवागवण निवार।
इण टाणे सूं मत टालियो।5।

भावार्थ- बाबो श्री गुरु जम्भेश्वर जी ने अवतार धारण किया है। स्वयं श्याम सुन्दर श्री कृष्ण ही सम्भराथल पर आये हैं। स्वयं ही अलख निरंजन आये हैं। परन्तु जिस जीव के भाग्य उच्च कोटि के हैं वही प्राप्त कर सकते हैं। भाग्य से ही प्राप्ति होती है तथा साधना की भी आवश्यकता होती है। जिन्होंने मानसिक अहंकार का त्याग किया है वही अधिकार है। अवतारधारी श्री श्याम ने जो स्नानादि शुद्ध क्रियाओं से रहित थे तथा अनजान थे किसी से भी कभी कोई अच्छी बात भी नहीं करते थे, उन मूर्ख लोगों को सुज्ञानी बना दिया। अज्ञानता का आवरण कुलक्षण छुड़वाकर कर्त्तव्य कर्म बताया और उन्हें पवित्र किया। साक्षात् भगवा वस्त्र धारण करके विष्णु ही आये थे। स्वयं विष्णु ने ही बाबे के रूप में अवतार धारण किया था और सम्भराथल पर आये।1। वेद शास्त्रों के द्वारा बताया गया आचार-विचार जो आदि युग में प्रचलित था वही परमेश्वर ने यहां आकर बतलाया था। बड़े-बड़े ठग जीव हिंसक अन्य जीवों को फंसाने वाले तथा चोर लोग जीव दया पालन करके धर्म का पालन करने लगे थे। वे लोग सभी कुछ जानते हुए भी अनजान बने हुए थे। मेघवाल आदि भी शूद्र वर्ण के लोग भी तथा शिकारी लोग भी गुरुदेव के सामने जल छान करके पीने लग गये थे। वे जीव हिंसक लोग जीव हत्या करते थे, वे ही लोग जल छानकर पीने लगे थे। बकरों को मारकर उदर पूर्ति करने वाले, मछली मारने वाले झींवर लोग भी अपने कर्म को छोड़ चुके थे। जो लोग मध्यम थे उन्हें उत्तम किया तथा उन लोगों ने गुरुदेव के आचार-विचार को पहचाना था क्योंकि परमेश्वर तो पूर्ण स्वामी है।2। मीर मुलक के सुलतान, पीर पुरुष भी आकर गुरुदेव के चरणों में अपना सिर झुकाने लगे है। सिर झुकाने से ही पापों की पोटली गिर जाती थी, पाप दूर झड़ जाते। क्योंकि सृष्टि के सर्जन कर्त्ता के सामने पाप कैसे टिक सकते हैं। स्वयं स्वयंभू ही आये हैं, लोगों को संसार सागर से पार उतारने के लिये। सूतजी द्वारा कथित पुराण तथा कुराण को छोड़कर केवल एक विष्णु का ही कथन एवं श्रवण करो। तीन वर्ण के लोग आकर चरणों में सिर झुकाते है जिनमें मीर मुलक सुलतान आदि सम्मिलित होते थे।3। बड़े-बड़े राजा लोग सद्पंथ के अनुगामी बने जैसा गुरुदेव ने फरमाया वैसा ही किया। वचन विचार करके शुद्ध तथा सत्य बोलने लगे। मुख से देव वाणी का उच्चारण करते, देववाणी को विचार करके कथन करते। महिलायें हाथों में हथफूल, पीतल के अलंकार, मनकों की झालर तथा नील वस्त्र पहनना ये सभी सहर्ष त्याग दिये थे। इन दुर्गुणों को त्याग करके नित्य प्रति हरि के नाम हवन प्रारम्भ कर दिया। पाहल लेकर सभी पवित्र हुए और गुरु के दर्शन करके तो कृत-कृत्य हो गये। कलियुग के समय को समझ करके बड़े-बड़े राजा लोग शरण में आये और गुरु के कथनानुसार ही अपना जीवन बिताया।4।

केशोजी कहते है कि हे देव! हमारी आवागवण अवश्य ही मिटा दीजिये। हमें आप कहीं मोहमाया में फंसाकर इस अवसर को टाल मत देना। अब तो आप हमें अपना बना लीजिये। अपनी पिछली छाप जो आपने पहले भक्तों को पार उतारा है वह अवश्य ही निभाइये। हे जम्भगुरु! आप तो जगत के स्वामी हो, सभी कुछ जानते हो, हम आपसे क्या कहे। पांच, सात, नव करोड़ को आपनें पार उतारा है। उसी परंपरा में आप हमें भी गिन लीजिये। हरि से प्रेम करना ही हरि के दर्शन में कारण है तथा हरि का दर्शन ही पार उतारने वाला है। हे पूर्ण परमात्मा! केशोदास को तो आप की ही आसा है। इसलिये हमारा आना-जाना अवश्य ही निवृत्त कीजिये कोई बहाना बनाकर टाल मत देना।5।

गुरु जाम्भोजी एवं सनातन धर्म

आजकल भारतीय राजनीति एवं सोशल मीडिया में जिस विषय पर सबसे ज्यादा संदेश देखने को मिलते हैं वे हिंदुत्व विचारधारा के या गौमाता की रक्षा या फिर प्राचीन भारत के महिमा मंडन से सम्बंधित होते हैं जिसमें अक्सर सनातन हिन्दु धर्म को श्रेष्ठ तथा कुछ हद तक मुस्लिम धर्म की बुराई भी की गई होती है तथा कुछ गहरे रूप में हिन्दु धर्म एवं मुस्लिम धर्म का तुलनात्मक अध्ययन भी किया हुआ होता है जो शायद प्रमाणित कम होते हैं अपितु एक से दूसरे के पास भेजे हुए ज्यादा होते हैं। ऐसे में श्री जाम्भोजी भगवान की विचारधारा से एक बार इस वर्तमान परिदृश्य को देख लिया जाए तो उचित होगा। हिन्दू धर्म में समय के साथ-साथ ब्राह्मणवाद हावी होता गया और विष्णु अराधक सनातन धर्मी आर्य मूर्ति पूजा, प्रतीक पूजा, भूत-प्रेत, पित्तर, चौंसठ जोगनियां और यहां तक कि मरे हुए जीवों को भी ईश्वर के नाम पर पूजने लगे। जो हिंदु धर्म एक कर्म प्रधान धर्म था और जिसमें यज्ञ ही प्रमुख उपासना पद्धति थी और वेद ही आचार संहिता थी उसमें पूजा और उपासना के नाम पर मूर्ति पूजा और आचार संहिता के नाम पर आडम्बरी धर्म गुरु हावी हो गए जिन्होंने ईश्वर के नाम पर एक बहुत बड़ा बाज़ार बना दिया और आम जन को धर्म के भय से तथा ज्योतिष और तंत्र-मंत्र से भयभीत रखा। इसके अतिरिक्त इतर देवी-देवताओं की मान्यता चरम पर थी। मुस्लमान मुहम्मद के नाम पर निरीह जीवों की हत्या करते थे और इसे उचित भी ठहराते थे। ऐसे अराकता एवं धर्म विहीन स्थिति में गुरु जम्भेश्वर भगवान का अवतार होता है। गुरु महाराज किसी भी धर्म की आलोचना नहीं करते अपितु दोनों ही धर्मों में प्रचलित पाखंडों पर चोट करते हैं और मनुष्य को उचित कर्म की सीख देते हैं और मुक्ति के लिए विष्णु भगवान को आराध्य मानकर केवल यज्ञ के माध्यम से उपासना पर बल देते हैं अर्थात् सच्चे अर्थ में सनातन धर्म की पुन: स्थापना करते हैं।

गुरु जाम्भोजी नीचे वर्णित शब्दों में हिंदुओं को पाखंड छोड़कर केवल विष्णु भगवान की आराधना करते हुए उचित कर्म की सीख देते हैं-

'गोरख दीठा सिद्ध ना होयबा। पोह उतरीबा पारूँ।'

(सबद 26)

गोरख जी को (या उनकी फोटो या समाधी) देखने मात्र से ही सिद्ध नहीं हो सकते। सुपथ पर चलकर ही इस भवसागर से पार हुआ जा सकता है (मुक्ति मिल सकती है)

'जपी तपी तक पीर ऋषेश्वर।.....
खेचर भूचर खेतरपाला परगट गुप्ता।.....
वासिग शेश गुनिदा फनिदा।.....
चोंसट जोगिनी बावन बिरुं।.....
कांय जपिये ते पणी जाया जियूं।
जपो तो एक निरालम्भ शिम्भु जिहिं के माई न पीऊं'

(सबद 5)

जती, तपस्वी, तकिया फकीर, पीर, ऋषि मुनि, आकाश में व पृथ्वी पर विचरण करने वाले, खेत्रपाल (भैरव), प्रकट या गुप्त रूप में रहने वाले, वासुकि, शेषनाग जैसे गुणवान फनधारी नाग, 64 योगनियां, 52 वीर इत्यादि भी जप (आराधना) करने योग्य नहीं है। इन सबको क्यों जपते हो। ये पैदा हुए जीव जपने योग्य नहीं हैं। सिर्फ एक निराधार स्वंभू ही जपने योग्य है जिसके कोई माता-पिता नहीं है। (केवल निराकर विष्णु ही जपने योग्य है)

'पाते भुल्या मूल न खोजा। सींचो कांय कुमुलुं'

(सबद 15)

पत्तों में ही (आन देवता व पाखण्डों) में ही भूले हुए भटक रहे हो। मूल (परम तत्त्व/परमात्मा) की खोज नहीं करते हो और मूल (जड़) में भी कुमुल को क्यों सींचते हो। (इससे तो कुफल ही प्राप्त होंगे सुफल नहीं)

'भल मूल सींचो रे प्राणी। भूले प्राणी विष्णु न जंप्यो मूल न खोज्यो। (सबद 31)

हे लोगों भली मूल को ही सींचो। (विष्णु का जाप करो) आत्मतत्व को पहचानो।) तुमने ना तो विष्णु का

जाप ही किया ना ही मूल तत्त्व (आत्मा/परमात्मा) की खोज की।

'जां जां गुरु ने चिन्हों। तैइया सींचा न मुलुं।'

(सबद 35-36-37-38)

जिसने परमात्मा की पहचान नहीं की उसने मूल तत्त्व को नहीं सींचा।

'दोय मन दोय....। काहे काज दिसावर खेलो मनहठ सीख न कायो।' (सबद 45)

दुविधा से कोई काम नहीं होता। एकाग्रता जरूरी है।

बाहर क्यों भटक रहे हो। मन/हृदय में ही परम तत्त्व/जीवात्मा को खोजो। मनहठी कुछ सीख नहीं पाता।

'हिन्दू होय कर तीर्थ न्हावै, पिंड भरावे। तेपण रह्या इवाणी। जोगी होइके मुंड मुंडावे कान चिरावे। गोरख हटड़ी धौके। तेपण रह्या इवाणी। तुर्की होय हज काबो धोके। भुला मुसलमानी।' (सबद 50)

जो हिन्दू होकर तीर्थों में स्नान करता है व पिंडदान करता है वो अज्ञानी है। जोगी होकर गोरख की समाधी धोकते हैं, मुंड मुंडाते हैं, कान चिरवाते हैं वो अज्ञानी हैं।

जो मुसलमान होकर हज करता है व काबे को धोकता है वह असली मुसलमानी धर्म को भूल गया है।

'धवणा धुजे पाहण पूजे। बेफरमाई खुदाई।
गुरु चेले के पाय लागे। देखो लोग अन्यायी।
काठी कणजो रूपा रेहण। कपड़ मांह छिपाई। निचा पड़-पड़ थाने धोके धीरा रे हरी आई। ब्राह्मण नाउँला दन रूड़ा।
बुता नाउँ कुता। वे अपाने पोह बतावे। बेर जगावे सुता।
भुत प्रेती जाखा खाणी। यह पाखंड परवाणो।
फिरन्ता ते भुवंता, भुवन्ता ते फिरंता। मडे मसाणे। तड़े तड़गे। पड़े पषाणे। वां तो सिद्धि न काई' (सबद 71)

गर्दन हिला हिला कर (छियां आना) पत्थर की पूजा करते हो वो ईश्वर की आज्ञा नहीं है। गुरु चेले के पांव पड़ रहा है। ये तो अन्याय है। (मूर्ति का निर्माण मूर्ति के पांव पड़ रहा है।)

ब्राह्मण/पुजारी काठ, सोने, चाँदी या मिट्टी से बनी मूर्ति को कपड़े पहनाते हो, फिर नीचे पड़-पड़ कर धोक लगाते हो और लोगों से कहते हो कि धीरज रखो हरि आएंगे। ऐसे ब्राह्मण से तो गधा अच्छा है और ऐसी बुत (मूर्ति) से जो कुत्ता अच्छा है जो अपने मालिक को रास्ता बताता है व चोरों के आने पर उसे जगाता है।

भूत-प्रेत व यक्षों की पूजा तो प्रमाणिक पाखंड है।

श्मशान में शव पूजा, तालाब व नदी पर स्थापित पत्थरों की मूर्तियों की पूजा के चक्कर फिरना व भटकना व्यर्थ है। इनसे तो सिद्धि नहीं हासिल होगी।

इसी प्रकार गुरु जाम्भोजी ने मुस्लिम सम्प्रदाय को भी अपने पाखंडों को छोड़कर और निरीह जीवों को मारने को छोड़ कर सद्मार्ग अपनाने पर जोर दिया।

ओ३म् बिस्मिल्ला रहमान रहीम, जिहिं कै सदकै भीना भीन। भावार्थ- विस्मिल्ला तो रहम-दया भाव रखने वाले स्वयं विष्णु अवतारी राम ही है। उनका मार्ग तो तुम्हारे से भिन्न ही था। वर्तमान में तुमने जो जीव हत्या का मार्ग अपना रखा है यह तुम्हारा मनमुखी है। उनको बदनाम मत करो। गुरु जाम्भोजी ने हिन्दुओं के समान ही मुसलमानों को भी चेताया और पाखंड एवं जीव हत्या छोड़ कर विष्णु को आराध्य मानने की सलाह दी है-

तो भेटिलों रहमान रहीम, करीम काया दिल करणी।

सभी पर रहम करने वाले श्री राम एंव गोपालक श्री कृष्ण को दिल रूपी हृदय गुहा में स्थिर करके फिर कोई शुभ कार्य करोगे तभी तुम्हारा कार्य सुफल होगा। उस रहीम में भेट मिलन भी हो सकेगा।

कलमा करतव कौल कुराणों, दिल खोजो दरबेश भइलो तइयां मुसलमानों।

शुभ ना कर्म करना ही कलमा रखना है और प्रतिज्ञा निभाना ही कुरान पढ़ना है तथा यही पीर पैगम्बरों का आदेश है। जो व्यक्ति अपने ही अंत: करण में छिपे हुए अवगुणों को खोजकर उनको निकाल देता है एवं शुद्ध पवित्र हो जाता है वही सच्चा मुसलमान है तथा वही दरवेश है।

पीरां पुरुषां जमी मुसल्ला, कर्तब लेक सलामों।

पीर पुरुष और सभी एकत्रित हुए मुसलमानों आप लोग आपस में एक दूसरे के प्रति सलाम करते हो यह भी तुम्हारी सलाम व्यर्थ ही है क्योंकि जब तक नेक कमाई नहीं करोगे तब तक तुम्हारा कभी भी कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता है। कथनी और करनी में एकता ही जीवन

में सुख का मूल है। वास्तविक सलाम तो नेक कमाई है।

'हम दिल लिल्ला तुम दिल लिल्ला, रहम करे रहमाणों।' हमारे दिल में वह लीलाधारी परमेश्वर है और तुम्हारे दिल में भी वहीं विराजमान है क्योंकि वह रहम करने वालों में सर्वश्रेष्ठ है। अर्थात् जो एक हिन्दू महात्मा को मानव शरीर दिया है उसी ने ही मुसलमान को भी वही अमूल्य मानव चोला दिया है तथा स्वयं ही उसमें प्रवेश भी हुआ है।

इतने मिसले चालो मीयां, तो पावो भिस्त इमाणों।

हे मियां! ऊपर बताये हुए मार्ग नियमों पर चलोगे तो भिस्त स्वर्ग प्राप्त कर सकते हो। जिसका प्राप्ति के लिए दिन-रात प्रयत्नशील दिखाई देते हो।

सुणि रे काजी सुणि रे मुल्ला सुणि रे बकर कसाई
किण री थरपी छाळी रोसो किण री गाडर गाई
काढे भागे करक दुहेली जायौ जीव न घाई
थे तुरकी छुरकी भिसती दावौ खायबा खाज अखाजू
चर फर आवै सहज दुहावै तिहवां खीर हलाली
तिरकै गळे करद क्यों सारो थे पढ़ सुन रहिया खाली

अर्थात् हे काजी, हे मुल्ला, हे गाय हत्या करने वाले कसाई! सुनो तुम किसकी सिरजी हुई बकरी मारते हो? किसकी सिरजी हुई भेड़ और गाय मारते हो? पीड़ा अत्यंत दु:खदायी होती है उससे बचने के लिए ये बेचारे भाग कर कहां जाए। ये मनुष्य के आश्रित है अत: हे भाई इन पैदा हुए जीवों पर प्रहार मत करो! हे मूर्खो एक ओर तो तुम इन पर छुरी से वार करते हो तथा मार कर इनको खाते हो अखाद्य भक्षण करते हो और दूसरी ओर बहिश्त यानि स्वर्ग पाने का दावा करते हो यह कैसे संभव है जो दुधारू पशु जंगल में चर फिर आता है और सहज ही दूध दुहा लेता है उसका दूध पीना तो जायज है किंतु उसके गले पर छुरी क्यों चलाते हो! तुम लोग तो पढ़-लिख कर भी और उस पर मनन कर भी खाली ही रहे शून्य ही रहे।

भाई नाऊं बळद पियारो, तिहंके गले करद क्यों सारो

भाई से अधिक प्यारा बैल है, तुम उसके गले पर छुरी क्यों चलाते हो।

काहे काजे गऊ विणासौ, तो करीम गऊ क्यों चारी
काहीं लीयो दूध दहियू काहीं लियां घीयो महीयू
कहीं लीयो हाडू मांसू काही लियो रक्तू रहियो
सुण रे काजी सुणि रे मुल्ला या मैं कुण भला मुरदारी
जीवां ऊपर जोर करीजे अंत काल होयसी भारी

अर्थात् यदि गाय की हत्या करने योग्य है तो करीम ने गऊ क्यों चराई थी और फिर भी यदि गाय की हत्या करते हो तो उसका दूध, घी, दही क्यों खाते हो। हे मुसलमानों तुम अपवित्र हो जीवों ऊपर बल प्रयोग करते तो अंत समय में दु:खदायी होगा।

रे विनही गुण जीव क्यूं मारौ थे तकि जांणो पीड़ न जाणो विणी परचे वाद निवाज गुजारो

हे भाई तुम बिना किसी दोष के जीव हत्या क्यों करते हो तुम लोग बिना किसी दोष के जीव हत्या क्यों करते हो! तुम लोग जीवों को मारना तो जानते हो किंतु इससे उनको जो पीड़ा होती है उसे नहीं पहचानते हो! बिना ज्ञान के तुम व्यर्थ ही नमाज पढ़ते हो!!

(सबद 10)

महमंद महमंद न करि काजी महमंद का तो विषंम विचारूं।
महमंद हाथि करद जो होती लोहै घडी न सारूं।
महमंद साथि पकंबर सीधा एक लख असी हजारुं।
महमंद मरद हलाली होता तुम भये मुरदारुं।

शब्दार्थ- हे काजी! 'मुहम्मद'-मुहम्मद मत करो (क्योंकि तुम सही रूप में मुहम्मद साहब को नहीं जानते हो। तुम समझते हो कि जीव हत्या करते हुए हुम मुहम्मद के मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं, पर ऐसी बात नहीं है), मुहम्मद साहब का विचार बहुत गंभीर और कठिन है। मुहम्मद के हाथ में जो छुरी थी वह न लोहे की गढ़ी हुई थी और न इस्पात की।

(पैगम्बर मुम्मद साहब के पहले उनके समान एक लाख अस्सी हजार पैगम्बर और सिद्ध या पीर पुरुष धरती पर आ चुके थे; (यहां 'साथ' का अर्थ 'साथ के', 'समान' या 'भांति' है या इनमें आदम पहले है हजरत मुहम्मद साहब अन्तिम नबी थे।

मुहम्मद तो हलाली मर्द थे (न्याय विहित कमाई खाने वाले थे), मरे हुए जीवों को खाने वाले तो तुम्हीं हुए हो।

सुण रे काजी सुणि रे मुल्ला सुणियो लोग लुगाई
म्हे नर निरहारी एकळ वाई जिणी ओ राह फरमाई

जोर जरब करद जो छोड़ो तो कलमां नांव खुदाई

अर्थात् हे काजी, हे मुल्ला, हे स्त्री पुरुषो, सुनो मैं विष्णु हूँ निराहारी हूँ और केवल वायु के सहारे ही रहता हूँ! किसी निरीह जीव पर जोर जबरदस्ती करना छोड़ कर ही स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है।

गुरु जाम्भोजी की शिक्षाओं ने तत्कालीन समाज में एक क्रांति पैदा कर दी थी। हिन्दुओं व मुसलमानों ने पाखंड को छोड़कर विष्णु भगवान को अराध्य बनाया और कर्म पर बल दिया। समसुद्दीन, अमियादीन और रहमत अली और उत्तर रो राव सांई राजा कहिए जैसी महान् साखियों की रचना की.... गायों के प्रति दया भाव का संचार हुआ हर हिंदु और मुसलमान के घर में गाय पाली जाने लगी और सम्पूर्ण सृष्टि के प्रति दया भाव जाग्रत हुआ जिसकी परिणिती खेजड़ली के 363 बिश्नोई के द्वारा दिए गए अहिंसक बलिदान के रूप में हुई।

आज सनातन हिंदु धर्म की पुन: स्थापना के लिए संगठनों द्वारा जो मुहिम छेड़ी हुई है वह यथार्थ के धरातल पर उतनी मजबूत नहीं लग रही जितना प्रयास गुरु जाम्भोजी ने सनातन हिंदु धर्म की स्थापना हेतु किया गया था। आज तमाम ऐसे हिंदुवादी संगठन केवल दूसरे धर्मों की आलोचना से और अपने पौराणिक इतिहास से ही सनातन हिंदु धर्म को श्रेष्ठ साहिब कर रहे हैं जबकि गुरु जाम्भोजी से किसी भी धर्म की आलोचना कभी नहीं की और जितना प्रहार दूसरे धर्मों के आडम्बरों पर किया उससे कहीं ज्यादा हिंदू धर्म में फैले मूर्तिपूजा और तंत्र-मंत्र व ब्राह्मणवाद पर किया।

आज समाज में जो कुछ तथाकथित धर्म गुरु पनप रहे हैं जो न केवल धर्म के नाम पर आडम्बर फैला रहे बल्कि आर्थिक शोषण भी कर रहे है, उनके बारे में अपनी शब्दवाणी में सचेत कर दिया था कि ऐसे नुगरे लोगों के फेर में मत आना।

आज हिंदुत्व के नाम पर जो लोग घर वापसी जैसे कार्यक्रम आयोजित कर रहे है उन्हें गुरु जाम्भोजी के जीवन से सीखना चाहिए कि आस्था के विषय को तर्कों व पाखंड के नाश से सुधारा जा सकता है जोर जबरदस्ती या लालच से नहीं।

आज जिस स्वच्छता के नाम पर इतना पैसा बर्बाद किया जा रहा है उनको एक बार गुरु जाम्भोजी के जीवन में झांकना चाहिए क्योंकि गुरु जाम्भोजी तो स्वच्छता व मन की शुचिता को परम धर्म मानते है।

वर्तमान परिदृश्य में समस्त समस्याओं का समाधान गुरु जाम्भोजी की शब्दवाणी में उल्लेखित है जरूरत है इस बात की कि जो बिश्नोई भाई-बहन आज के समय में ऐसे हिंदुवादी संगठन से जुड़े हैं वे न केवल अपने संगठन को अपितु विश्व को भी यह बताए कि बिश्नोई धर्म ही वर्तमान में सनातन धर्म को बचाए हुए है और गुरु जाम्भोजी की शब्दवाणी के रूप में विश्व का पांचवां वेद संजोए हुए है।

जरूरत है उस बात की कि ऐसे संगठनों से जुडे लोग राजनीतिक उद्देश्य को छोड़ कर यथार्थ के धरातल पर जीवन व धर्म को सार्थक करें।

- एडवोकेट संदीप बिश्नोई
श्री गंगानगर

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

विक्रमी सम्वत् 2072, आषाढ़ (द्वितीय) की अमावस्या

लगेगी : 15.07.2015, वार बुधवार, प्रात: 6:38 बजे
उतरेगी : 16.07.2015, वार गुरुवार, प्रात: 6:53 बजे

विक्रमी सम्वत् 2072, श्रावण की अमावस्या

लगेगी : 13.08.2015, वार गुरुवार, सायं 6:48 बजे
उतरेगी : 14.08.2015, वार शुक्रवार, सायं 8:23 बजे

विक्रमी सम्वत् 2072, भाद्रपद की अमावस्या

लगेगी : 12.09.2015, वार शनिवार, प्रात: 9:42 बजे
उतरेगी : 13.09.2015, वार रविवार, दोपहर 12:10 बजे

मेले व पर्व

जन्माष्टमी : 5.09.2015, हिसार, पीपासर, मेहराणा धोरा
खेजड़ली शहीदी मेला : 23.09.2015 खेजड़ली
माधा मेला : 28.09.2015 जाम्भोलाव

पुजारी : **बनवारी लाल सोढ़ा,** (जैसलां वाले)
मो.: 09416407290

भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण

गतांक से आगे.....

प्राचीन काल की ये भावनाएं अपने देश के विभिन्न भागों में अभी भी अलग परम्पराओं का रूप लेकर प्रचलित हैं। कहीं मनोकामना पूर्ति के लिए, तो कहीं देवता का स्वरूप मानकर इनकी पूजा-अर्चना की जाती है। बिहार प्रान्त के कई इलाकों में आज भी जब वर-वधू गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते हैं, तो वे एक पेड़ लगाते हैं। उनकी मान्यता है कि यह पेड़ जितना हरा-भरा रहता है, उनका दाम्पत्य जीवन उतना ही सुखी, स्वस्थ एवं सम्पन्न होता है। वटवृक्ष की पूजा सुहाग प्रदान करने एवं उसकी रक्षा करने के लिए करने का प्रचलन है। देश के अनेक अंचलों मे ज्येष्ठ मास की अमावस्या को उपवास रखकर वटवृक्ष की पूजा की जाती है। कुछ क्षेत्रों में पुत्र प्राप्ति के लिए पीपल की उपासना करने का विधान है।

प्रकृति और आदिवासी तो एक-दूसरे के पर्यायत हैं। बहुत से आदिवासियों में यह प्रथा है कि विवाह के समय वधू महुए के पेड़ पर सिन्दूर लगाकर उससे सुहागिन होने का वरदान मांगती है। पर आम के पेड़ को नमन कर अपने वैवाहिक जीवन की सफलता की कामना करता है। कुछ प्रान्तों में हलषष्ठी के दिन महिलाएँ झरबेरी और बाँस के पेड़ों की पूजा करने अपने पुत्रों के दीर्घजीवन की कामना करती हैं। दशहरे पर शमी वृक्ष की पूजा का विधान आज भी देश के अनेक भागों में प्रचलित है। तुलसी को शुद्धि की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है, अतः कोई भी भोग तुलसी के बिना पूरा नहीं माना जाता। आम, जामुन, असन, लोध्र, शाल, कटहल, अंकोल, सुन्दर, तिनिश, बेल, तेंदू, बाँस, काशमरी, वरण, महुआ, तिलक बेर, आँवला, कदम्ब, बेंत, अनार आदि फूलों-फलों और छायादार वृक्षों की महत्ता को दर्शाने वाली अनेक परम्पराएँ अपने देश के विभिन्न भागों में प्रचलित हैं।

अपने देश एवं समाज में इन परम्पराओं का प्रचलन यह सिद्ध करता है कि हमारे पूर्वज पर्यावरण के प्रति कितने जागरूक थे। उनकी यह जागरूकता प्राचीन ग्रन्थों में भी विविध रूपों में प्राप्त है। उदाहरण के लिए, धर्मशास्त्रों में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि जो वृक्ष को काटता है, वह संतान से वंचित हो जाता है। यही नहीं, पेड़ को पुत्र के समान बताया गया है। शास्त्रों में केवल सूखे पेड़ काटे जाने को उचित माना गया है। हरे पेड़ों को काटने से प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है, इसलिए इस पर निषेधाज्ञा लागू की गई थी। यज्ञ-हवन आदि धार्मिक कृत्यों के लिए सूखे पेड़ तलाशने की परम्परा थी।

प्राचीन समय में पर्यावरण संरक्षण को हर जन अपना पुण्य कर्त्तव्य मानकर चलता था। विभिन्न ऋषि-मुनियों के पर्यावरण सम्बन्धी श्लोकों तथा स्वयं के अध्ययन को वराहमिहिर ने अपनी पुस्तक 'बृहत्संहिता' में संकलित किया है। वराहमिहिर ने अपना परिचय देते हुए लिखा है कि वे उज्जयिनी के पास कपिथ ग्राम के आदित्यदास के पुत्र थे। उनके काल को लेकर अनेक भ्रान्तियाँ हैं। कुछ उन्हें विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक मानते हैं पर अन्य विद्वान उन्हें छठी शताब्दी का बताते हैं।

जलाशयों, बांधों के निर्माण, जलग्रहण क्षेत्रों के विकास, वृक्षारोपण व जलीय पुनर्भरण पर इनके प्रभाव पर वैदिक विचारधारा न मात्र वैज्ञानिक वरन् समयानुकूल भी है। वे लिखते हैं-

पाली प्रागपारयताम्बु सुचिरं धते न याम्योतरा।
कल्लोलैखदारमेति मरुता सा प्रायशः प्रेरितैः॥
तां चेदिच्छति सारदारुभिरपां सम्पातमावारवेत्।
पाषाणदिभिरैव वा प्रतिचयं क्षुण्णैद्विपार्श्वादिभः॥

बांध पूर्वावरायल बनाया जाना चाहिए, उसमें पानी अधिक ठहरता है। जलाशय या बांध का कच्चा बंद वायु की दिशा के विरुद्ध या दक्षिणतर हो तो तरंग उसे नष्ट कर देती है। अतः मिट्टी व लकड़ी, पत्थर की कटी हुई दीवार बनवानी चाहिए। जब जलाशय या बांध बन जाए तो उनके प्रबन्धन व जल संग्रहण क्षेत्र के विकास के लिए ये उपाय करने चाहिए।

प्रान्तछायाविनिर्मुक्ता न मनोज्ञा जलाशया।
यस्मादतो जलप्रान्तषवश्मान विनिवेशयेत्॥

छायादार वृक्षों की जड़ें जब तक भूमि पर अपनी पकड़ नहीं बनाती तब तक जलाशय के किनारे छायारहित रहते हैं। बांधों तथा जलाशयों के किनारों पर वृक्षारोपण हो, वह इस श्लोक से स्पष्ट है :

ककुमवटाम्रप्लक्षकदम्बैः सनिचुलजम्बूवेतसनीमैः।
कुरुकतालाशोक मधूकैः बकुलविमिश्रेरावृततीराम्॥

तट पर जामुन, बांस, अर्जुन, बरगद, आम, पिलखन, अशोक, महुआ, कदम्ब और मौलसरी के पौधे लगाने चाहिए।

अतः जल संग्रहण क्षेत्रों का विकास परमावश्यक है। उन क्षेत्रों में वृक्ष रोपने की विधि पर वे लिखते हैं :

मृद्वी भूः सर्ववक्षाणं हिता तस्यां तिलान् वपेत्।
पुष्पितास्तार्चे मृद्वीयात कमैंतठाथयं भुवः॥

मृदायुक्त भूमि वृक्षों के लिए उत्तम होती है तथा हरी खाद के रूप में तिल की फसल का प्रयोग किया जाना उपयुक्त है। ऐसा करने से अच्छे वृक्ष लगते हैं। वृक्षों को स्वस्थ रखने के लिए 20 हाथ पर फासला रखना चाहिए।

वृक्षारोपण के लिए अन्य वृक्षों के नामों का उल्लेख करते हुए वराहमिहिर कहते हैं-

घर के समीप व खेतों में नीम, अशोक, पुन्नाग, शिरीष आदि वृक्ष लगाने चाहिए। कश्यप मुनि भी कहते हैं कि अशोक, चम्पा, अरिष्ट परिजात आदि वृक्ष गृह व देवालयों के लिए श्रेष्ठ हैं। इस वैज्ञानिक अवधारणा को जन भावनाओं से जोड़ने के लिए लिखा है:

कृत्वा प्रभूतं सलिलमारामान्विनिवेशयेत्।
देवतायतनं कुर्याद्यशौधर्माबिवृद्वये॥
एवं
इष्टापूर्तेन लभ्यन्ते से लोकास्तान बुभूषता।

अर्थात् धर्मप्राण व्यक्ति को जलाशय बनाकर, वृक्षारोपण कर देवालय बनाने के यज्ञ के बराबर मिलता है।

सलिलिद्यानयक्तेषु कृतेवकृतकेषु च।
स्थाननवषेषु सान्निध्यमुपगच्छन्ति देवताः॥

कृत्रिम या प्राकृतिक जलाशयों व उपवनों में देवता निवास संचरण करते हैं।

हमारे पूर्वजों का वैज्ञानिक चिन्तन सही था। वे समझते थे कि बांधों तथा जलाशयों का पर्यावरण तब तक स्वस्थ नहीं रहेगा जब तक कि सम्पूर्ण पारिस्थितिकी व्यवस्था की जांच न कर लें। जैविक विविधता का भी महत्त्व इन श्लोकों में दर्शाया गया है :

कृकवाकुजीव जीवक शकशिखिशतपत्र चाषहारी तैः।
क्रकरचकोरकपिंजलवंजुल पारावत श्री कैः॥
पुंस्कोकिलादिभिश्राम्यैः।
विरुपे वनोपकण्ठे क्षेत्रागारे शुचावथवा॥

वे जलाशय तथा वन शुभ एवं सम्पूर्ण है जहां भ्रमर पुष्पों पर मंडराते हों तथा तोता, मोर, नीलकण्ठ, शतपत्र, चकोर, पारावत आदि पक्षी निवास करते हों।

प्रोत्प्लुतहंसच्छत्रैः कारण्डव कुटरसारसोदिते।
फुल्लेन्दीवरनयने सरसि सहस्त्रक्ष कान्तिधरे॥

उड़ती हुई बतखो के झुण्डों से आकाश जहां गुंजायमान हो, कारण्डव, कुटर, सारस आदि पक्षियों की बोली जहां सुनाई दे तथा शुद्ध जल में नीलकमल खिले हों, वह सरोवर शुभ स्नान योग्य है।

सरस्सु नलिनीछत्रनिरन्तर विरश्मिषु।
हंसासाक्षिन्त कल्हाखिथी विमलवारिषु॥
हंस, कारण्डव, कौच्चकवाक विराविषु।
पर्यन्तनिचुलचछायाविश्रान्तजलचारिषु॥

वह जलाशय शुभ और देवताओं के भी विश्रामयोग्य है, जहां कमलछत्र जल पर छाए हों, हंस, कारण्डव, काँच, चकवा जहाँ निवास करते हों, वहां भी देवता निवास करते हैं।

यामयादिष्वशुभफला जातास्तखः प्रदक्षिणेनैते।
उदगादिषु प्रशस्ताः प्लववटीपुम्बराश्रत्थाः॥
एवं
पुन्नगाशोकरिष्ट बकुलनसान् शमी शालै॥

पाकर, वट, गूलर, पीपल आदि वृक्ष प्रदक्षिण क्रम में रोहित करने चाहिए। कांटेदार वृक्ष हटाकर पुन्नाग, अशोक, अरेष्टि, कटहल, शमी के वृक्ष लगाने चाहिए। आज के युग में वनों की अंधाधुंध कटाई का नतीजा है कि आदर्श 35 प्रतिशत वनाच्छादित क्षेत्र घटकर 18 प्रतिशत रह गए, अतः हमें प्रभावित क्षेत्रों का संरक्षण करना होगा।

अत्यन्त संवेदनशील, विशेष रूप से प्रभावित हुए क्षेत्र हैं, उष्ण कटिबन्धीय वनक्षेत्र, सदपर्णी वन प्रदेश, समुद्रतटीय वन तथा पर्वतीय 'कोनिफर' वनक्षेत्र। किसी भी क्षेत्र की जलवायु व पर्यावरण के लिए वन क्षेत्रों के संरक्षण का बहुत बड़ा महत्त्व है।

वैदिक काल में वृक्ष काटने की वर्जना पर अत्यन्त प्रासंगिक श्लोक है :

खगनिलयभगन्संशुष्क दग्धदेवालाय श्मशान स्थान्।
क्षतितरुधविभीतक निम्बतरणिवर्जितान् छिन्द्यात्॥

जिस वृक्ष पर पक्षियों के घोंसले हो, उनका निवास हो, देवालय व श्मशान के आस-पास के क्षेत्र के वृक्ष नहीं

काटने चाहिए। दूध वाले वृक्ष जैसे बड़, बेहड़ा, अरडू तथा नीम आदि भी नहीं काटने चाहिए।

उद्यानदेवतालयपितृवन वलीकमार्गचितिजाताः।
कब्जोर्ध्वशुष्क कण्ठकवल्ली युभ्ताच्श्र॥
बहुविगालय कोटरमना नतापीडिताश्रच्ये तरवः।
ये च स्युः स्त्रीसंज्ञा न ते शुभाश्क्रकेत्पर्थे॥

अर्थात् उद्यान, मंदिर, पितृवन, दीमक की बाम्बी व जिन वृक्षों पर लताये छायी हों, वे वृक्ष नहीं काटे जाने चाहिए। जिन वृक्षों पर पक्षियों का निवास व उनके कोटर हों, वे सुरक्षित रहने चाहिए। इसी प्रकार चैत्य, राजमार्ग, आश्रम, नदियों के संगम पर स्थित वृक्ष किसी भी प्रयोजन के लिए काटना वर्जित है।

अंत में यदि वृक्ष काटना अत्यन्त आवश्यक हो जाए तो हमारे पूर्वजों ने मंत्र दिया वह अत्यन्त हृदयस्पर्शी, मार्मिक और हमारी प्रकृति प्रेमी विरासत का परिचायक है। मंत्र में वृक्ष पर निवास करने वाले जीव-जन्तुओं से क्षमा-प्रार्थना कर अन्यत्र व्यवस्था करने की याचना की गई है। आज की आवश्यकता है कि अल्पदृष्टि से शीघ्र फायदे की बात न सोच उन विशाल परम्पराओं को अपनाया जाए।

नमस्ते वृक्षपूजेयं विधिवत् सम्प्रगृहयताम्।
यानीह भूतानि व अर्चार्थममुकस्य त्वं देवस्य परिकल्पित।
सन्तितानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।
अन्यत्रवासं परिकल्पयन्तु क्षमन्तु तनिद्य नमोस्तु तेभ्यः॥

जिस देश में व्यक्ति वृक्ष काटने से पूर्व उससे क्षमाप्रार्थी हो, उस पर रह रहे जीव-जन्तुओं, पक्षियों से अन्यत्र निवास करने की विनती करता हुआ, ऐसी आदर्श स्थिति की कल्पना पुण्यभूमि भारतवर्ष को छोड़ कहां की जा सकती है? पर्यावरण एवं तकनीकी विकास में एक सामंजस्य पैदा करके जन भावनाओं को अपनी परम्पराओं से जोड़ कर हम भारतवासी पुनः एक बार नवीन प्रकृति-मित्र परम्परा में विश्व के मार्गदर्शक बन सकते हैं।

भारतीय संस्कृति में धर्म, दर्शन, रीति-रिवाज एवं विभिन्न धर्मों के त्यौहार, ये सभी भारतीय वातावरण के अनुकूल ही पनपते हैं, जिससे प्रदूषण को फैलाने की कोई गुंजाइश नहीं है और हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि इतनी पुरातन सभ्यता एवं संस्कृति में विभिन्न विदेशी जातियों के आगमन के उपरान्त भी समन्वय करने की क्षमता जबरदस्त है जो देश के पर्यावरण को संतुलित रखने तथा उसके संरक्षण में सफलता सिद्ध हुई है।

वर्तमान स्थिति में देश में शुद्ध पर्यावरण को बनाए रखने हेतु हमें भरसक सफल प्रयास करने की महत्ती आवश्यकता है जिससे वर्तमान पीढ़ी के साथ-साथ भावी पीढ़ी का भी व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य ठीक रह सकता है। अतः हमारी संस्कृति एक खुशहाल एवं सुखी जीवन जीने को प्रेरित करती है।

कृत्रिम वृक्षारोपण के साथ ही वन संरक्षण भी जरूरी है, क्योंकि जलवायु-संतुलन, जल एवं भू-संरक्षण तथा जैव विविधता की वास्तविक सुरक्षा प्राकृतिक वनों में ही सम्भव है। यह भी ध्यान दिया जाना जरूरी है कि मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण से पर्यावरण भी प्रभावित होता है। शोषक अपनी विलासिता व आमोद-प्रमोद के लिए आदतन प्रकृति को विनष्ट करता है। मनुष्यों में पारस्परिक सौहार्द्र एवं मर्यादा पर्यावरण संरक्षण के लिए परम आवश्यक है। शोषण एवं विषमता जितनी कम होगी पर्यावरण उतना ही समृद्ध होगा। पर्यावरण की समृद्धि होगा। पर्यावरण की समृद्धि ही संसार की समृद्धि है। तभी भावी पीढ़ी को जीवन की सम्पन्नता तभी सौंपी जा सकती है, जब वर्तमान पीढ़ी पर्यावरण संरक्षण के लिए पूर्ण जागरूक एवं कटिबद्ध हो। प्रत्येक नागरिक को न केवल स्वयं जानना चाहिए बल्कि द्वार-द्वार जाकर, घर-घर पहुँच कर जन-जन को यह चेताना चाहिए कि पर्यावरण संरक्षण केवल वृक्षारोपण नहीं है, अपितु वह प्राकृतिक आधार है, जिस पर मानव व जीव-जन्तु जीवित रहते हैं। इसी पर कृषि एवं औद्योगिक विकास निर्भर है। पर्यावरण की सृष्टि का आधारभूत जीवन तत्त्व है। अतः 'पर्यावरण संरक्षण' हमारे जीवन के लिए अति आवश्यक है।

- डॉ. बी.बी.एस. कपूर
पूर्व प्राध्यापक, स्नातकोत्तर वनस्पति विज्ञान विभाग
राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

बिश्नोई पंथ का महापुराण – `जम्भसार'

सन्तः स्वतः प्रकाशन्ते गुणा न परतो नृणाम्।
आमोदो नहि कस्तूर्याः शपथेन विभाव्यते॥

अर्थात् सन्त अपने गुणों को स्वयं प्रकाशित करते हैं, दूसरों द्वारा नहीं। कस्तूरी की सुगन्ध शपथ द्वारा नहीं प्रकट होती है। सन्त अपने श्रेष्ठ आचरण से समाज को पथ-प्रदर्शित करते हैं। श्रेष्ठ आचरण से ही सन्तों के चरण पूजे जाते हैं, उनके गुणों का ही बखान होता है। कहा भी गया है – 'गुणाः सर्वत्र पूज्यन्ते न महत्योऽपि सम्पदः'।[2] गोस्वामी तुलसीदास ने भी कहा है-

'सन्त मिलन सम सुख जग नाही।'

राजस्थान की भूमि के सन्त-महात्माओं ने भक्ति की जो धारा प्रवाहित की-उसके शीतल जल में आप्लावित होकर यहां का एवं देश के अन्य भू-भागों का जनमानस भगवद्भक्ति में आकंठ निमग्न हो गया। अनेक सन्त महात्माओं ने इस भूमि पर पदार्पण करके भक्ति रस की जो सुर सरीता प्रवाहित की, उसने युगों-युगों के घनीभूत कालुष्य को तिरोहित कर दिया। सामान्य और विशिष्ट सभी मानवों को ईश्वरोन्मुख बनाकर समाज में इन सन्तों ने जो आदर्श स्थापित किया है, वह भारतीय समाज को उनका अनन्य योगदान है।

वास्तव में राजस्थान की रत्नगर्भा वसुन्धरा सन्तों का पावन धाम है, जहाँ आत्मसाक्षात्कार करने वाले अनेक सन्तों ने विविध सम्प्रदायों का प्रणयन किया। इनमें निरंजनी, दादूपंथी, गूदड़पंथी, चरणदासी, लालदासी, जसनाथी, बिश्नोई एवं रामस्नेही प्रमुख है। यहाँ सभी सन्त सम्प्रदायों के आचार्यों और सन्तों की वाणियों के विशाल भण्डार है। सन्तों ने वाणियों की रचनाएँ परमार्थ के लिए की है। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान् काका कालेलकर का कथन है- "सन्तवाणी किसी राष्ट्र की सर्वश्रेष्ठ पूँजी है। यह वाणी का विलास नहीं, किन्तु जीवन का निचोड़ है। इसलिए वह जीवित और अमर होती है। सन्तवाणी वह पवित्र गंगा है, जिसमें स्नान पान करने से लोक जीवन समृद्ध, स्वतन्त्र और समर्थ हो जाता है।"[3]

गुरु जम्भेश्वर जी ने 51 वर्ष तक अज्ञानान्धकार विनष्ट करने वाली देव वाणी कही, किन्तु अधिकांश काल कवलित हो गई। सन्तों भक्तों के कण्ठस्थ 120 शब्द ही आज उपलब्ध है, जिनका नित्य प्रति पाठ होता है।

ग्रन्थ 'जम्भसार' में भी सन्त साहबरामजी ने 121 शब्दों का प्रसंग सहित संकलन किया है और तो सभी वही शब्द है जो वर्तमान में प्रसिद्ध है, किन्तु एक शब्द जो स्वांतिशाह बादशाह के प्रति कहा था-वह अधिक है।[4]

बिश्नोई सन्त साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् स्वामी कृष्णानन्द आचार्य 'बिश्नोई पंथ' के प्रवर्त्तक जम्भेश्वर जी (जाम्भोजी) के महनीय योगदान को रेखांकित करते हुए लिखते हैं- "जम्भेश्वरजी के शब्दों में ऐसी कुछ शक्ति विशेष थी, जो सुनते ही सभी प्रकार के दुर्व्यसनों को त्यागकर सन्त सदृश हो जाता था अर्थात् बिश्नोईत्व स्वीकार कर लेता था। 85 वर्ष के लम्बे अन्तराल में अनेक स्थानों में भ्रमण किया तथा जांति-पांति भेदभाव से ऊपर उठकर मानव मात्र को सद्मार्ग पर लाए। हिन्दू-मुस्लमान के आपसी वैमनस्य भाव को समाप्त कर के 'बिश्नोई पंथ' चलाया, जिसमें प्राणी मात्र का समावेश होता है। किन्तु शुभ कर्मों के अनुसार ही यह संभव था। उन्नतीस नियम रूपी एक आचार संहिता तैयार की, जिसकों स्वीकार करके और अभिमंत्रित जल पाहल पीकर कोई भी बिश्नोई बन सकता था, और बने भी हैं। यह कार्य अधिकतर बीकानेर जनपद में स्थित सम्भराथल धोरे पर ही हुआ तथा तपस्या स्थली भी यहीं पर ही है।"[5]

आचार्य श्री परशुराम चतुर्वेदी मानते हैं कि "जाम्भोजी का जीवन काल संवत् 1508 से लेकर संवत् 1593 तक ठहरता है। जिस कारण, जहां तक पता है, राजस्थान के क्षेत्र वाले हिन्दी के प्रमुख सन्तों में ये सबसे प्राचीन कहे जा सकते हैं। इधर ज्ञात हुआ है कि बिश्नोई सम्प्रदाय के अनुयायियों में बहुत ऐसे हुए है, जिन्होनें अनेक प्रकार के साहित्य की रचना की है तथा उसका बहुत सा अंश स्वयं इनकी जीवनी आदि से सम्बन्ध रखता है।"[6]

बिश्नोई पंथ के अनेक सन्त-भक्त कवियों ने उत्कृष्ट रचनाएँ हिन्दी साहित्य जगत को प्रदान की है। ये

रचनाएँ स्वानुभूति से परिपूर्ण तो है ही, अभिव्यक्ति की दृष्टि से भी श्रेष्ठ हैं। बिश्नोई सन्त साहित्य के शोधपरक आधिकारिक विद्वान डॉ॰ हीरालाल माहेश्वरी का कहना है- "हिन्दी और राजस्थानी भाषा, इनके साहित्यों, साहित्यिक प्रवृत्तियों, वैचारिक परम्पराओं, काव्यरूपों तथा सम्प्रदाय, संस्कृति, समाज और इतिहास आदि क्षेत्रों में जाम्भोजी, बिश्नोई सम्प्रदाय और उसके साहित्य की बहुत ही महत्त्वपूर्ण और महार्ध्य देन है। स्वतंत्र रूप में भी राजस्थानी और हिन्दी की प्रमुख काव्य धाराओं के समान्तर प्रवहमान विष्णोई काव्यधारा और सम्प्रदाय की वैचारिक परम्परा का विशिष्ट स्थान है।"[7] जाम्भोजी के आत्मानुभव के वचनों का सामूहिक नाम 'सबदवाणी' है, जो समय-समय पर उन्होंने अनेक लोगों के प्रति उनकी शंका-निवारण, जिज्ञासा-समाधान, प्रश्नोत्तर और प्रतिबोध कराने के लिए कहे थे।

साहबराम द्वारा लिखित 'जम्भसार' एक महत्त्वपूर्ण आख्यान काव्य है। गुरु जम्भेश्वरजी का जीवन चरित्र तथा बिश्नोई समाज का इतिहास बड़ा ही मार्मिक काव्यमय भाषा में वर्णित हुआ है। दोहा, चौपाई, छन्द, सोरठा, कवित आदि में लिखित यह ग्रन्थ 24 प्रकरणों में विभाजित है। तत्कालीन देश, समाज, लोकरुचि, आचार-विचार का इस ग्रन्थ में पूरा-पूरा पता चलता है। राजस्थानी भाषा की सुरक्षा भी इस महान प्रयास से सुलभ हैं। यत्र-तत्र उपमा आदि अलंकारों से भी कविता वनिता को सुशोभित किया है। विशेषतया वर्णनात्मक शैली अपनाकर कथाओं के माध्यम से कवि ने धर्म, नीति, आत्मज्ञान, दिनचर्या, आचरण शुद्धि सम्बन्धी उपदेश बड़ी ही कुशलता से दिया है। कहीं-कहीं नरक का भय दिखाने के लिए नारकीय जीवन का बड़ा ही करुणापूर्ण वर्णन किया है तथा उसी प्रकार स्वर्ग सुख तथा स्वर्गीय जीवन का वर्णन भी मन को आकृष्ट करता है। स्वर्ग प्राप्ति तथा नारकीय जीवन त्याग के लिए मानव शुभ कर्मों में प्रवृत्त हो जाता है। सहृदय मानव के लिए शान्ति प्राप्ति की अचूक औषधि है तथा केवल तर्क प्रवीण मानव को तो कहीं कुछ भी नहीं। यह एक धार्मिक ग्रन्थ होते हुए भी अच्छे साहित्य की कोटि में भी आने में समर्थ है। अत: साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक दृष्टियों से यह अनुपम है। कम से कम बिश्नोई साहित्य समुदाय में तो इसके समकक्ष अन्य ग्रन्थ दुर्लभ है।[8]

'जम्भसार' के रचयिता साहबराम राहड़ ज्ञानी, अनुभवी, बहुश्रूत और पढ़े-लिखे बिश्नोई धर्मानुयायी थे। ये संवत् 1871 में हुडिया गाँव (कुचामन पट्टे) में तारोजी के घर जन्मे थे। अल्पायु में वैराग्य धारण कर साधु के रूप में दीक्षित हुए। रामड़ावास (मारवाड़) में वील्होजी के मन्दिर को पूर्ण प्रतिष्ठित किया। जांगलू के थापन साधु गोविन्दरामजी गोदारा के शिष्य साहबराम ने दशाधिक रचानाएँ लिखी, जिनमें 'सार शब्द गुंजार' तथा 'जम्भसार' प्रमुख है। 'जम्भसार' 24,000 दोहे-चौपाई छन्द से युक्त वृहद् ग्रन्थ है। संवत् 1908 में इस ग्रन्थ की शुरूआत की जो 1924 सं॰ में समाप्त हुआ। 'जम्भसार' में मुख्यत: जाम्भोजी के जीवन-चरित का विस्तार से पद्यमय वर्णन है। साहबराम जी को 'जम्भसार' ग्रन्थ से पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त हुई। यह ग्रन्थ 24 प्रकरणों में विभाजित है, जिसमें वंशावली वर्णन, प्रहलाद, सनत्कुमार चरित्र कथा, अवतार-स्तुति, बिश्नोई पंथ स्थापना, भक्त विरुदावली, राजा-उपदेश, जोगी उपदेश, माहात्म्य वर्णन, महाप्रलय लीला, जोगी उपाख्यान, जम्भ भ्रमण, महाप्रस्थान, मन्दिर आख्यान, नीति-धर्म-माहात्म्य तथा जाम्भोजी के शिष्यों का वर्णन प्रमुख हैं। साहबरामजी को जितनी भी बिश्नोई रचनाएँ और सबदवाणी प्रसंग प्राप्त हुए, उनका समावेश 'जम्भसार' ग्रन्थ में है।

साहबराम जी पुरानी परम्परा के अन्तिम काल-निर्णायक कवि माने जाते हैं। उनके द्वारा विरचित ग्रन्थ 'जम्भसार' बिश्नोई पंथ का आधारभूत ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ से जाम्भोजी और बिश्नोई पंथ के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

'जम्भसार' ग्रन्थ पौराणिक पद्धति से लिखा गया अनुपम ग्रन्थ है। 'जाम्भोजी' इस महाप्रबन्ध काव्य के मुख्य नायक है। इसे बिश्नोई पंथ का महापुराण कहा जाय तो अतिश्योक्ति नही है। बिश्नोई समाज के साहित्यिक-सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक-धार्मिक गतिविधियों का यह 'विश्वकोष' है। 'जम्भसार' ग्रन्थ में बिश्नोई पंथ के लोकमानस की श्रेष्ठ झलक दर्शित होती है। जाम्भोजी के पश्चावर्ती कवियों एवं उनकी रचनाओं की जानकारी भी इस ग्रन्थ से प्राप्त होती है। मारवाड़ (मरूभूमि) की

रीति-नीति, आचार-विचार रहन-सहन विश्वास-मान्यता आदि के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है। कई नवीन रचानाओं का आधारभूत स्रोत यह 'जम्भसार' ग्रन्थ है।

'जम्भसार' ग्रन्थ की विशेषताएँ उद्घटित करते हुए सन्त काव्य मर्मज्ञ डॉ. हीरालाल माहेश्वरी लिखते हैं- 'जम्भसार में वर्णन और विवरण अधिक हैं, तथापि कहीं-कही वे बड़े चित्ताकर्षक, चित्रोपम् अर्थगर्भित और संकेतात्मक हैं। यत्र-तत्र वस्तुस्थिति का भी बड़ा हृदयग्राही वर्णन किया गया है। इनकी भाषा प्रमुखत: राजस्थानी है, जिसमें यत्र-तत्र खड़ी बोली, पंजाबी, अवधी और ब्रज का भी पुट मिलता है। हिन्दी काव्यों में तुलसी रामायण से ये विशेष प्रभावित हुए प्रतीत होते हैं। इनकी अनेक उपमाएँ और उक्तियाँ तो अत्यन्त ही रोचक हैं। इनसे इनकी सूक्ष्म लोक-निरीक्षण शक्ति और अन्वेषण दृष्टि का पता चलता है। रचनाओं से सबद वाणी के कुछ अंशों का अर्थ-स्पष्टीकरण भी होता है।'[9] वास्तव में 'जम्भसार' अपार सागर के समान है, उसमें अनेक ज्ञान रत्न मिलते हैं, उससे पार जाना कठिन है -

जंभसार अपार सागर, पार न पावही कविजनां।
मन वाक बुद्धि निर्मलार्थी, साहब गाऐऊ हरि जनां॥
जंभ गुँन उद्धि अपार अधिभुत, महेश श्रुति नहिं कहि सकै।
निगम अगम सेस शारद, गनेश नारद नित बकै॥
तेउ पार कबहु न पाय जंभगुन, नेति नेति नित कहि थकै।
जे हि जन गावहि फिर नहिं आवहि, सत् सत् मिलहहिं जेहि न लखै॥

"दोहा"

जंभ गुर गुँन जु अपार, पंडत मुँनि पावै काहा।
जेहि गावै श्रुति चार, साहबराम तव सिश रहा॥ 168॥10॥

साहबराम जी के विलक्षण ग्रन्थ 'जम्भसार' में दिव्य महापुरुष जाम्भोजी के गुणों का अद्भुत वर्णन है। यह ग्रन्थ हिन्दी सन्त काव्य को महाकाव्यात्मक उपहार है। जांभाणी साहित्य अकादमी के विद्वान् अध्यक्ष स्वामी कृष्णानन्द जी आचार्य के शब्दों में निष्कर्षत: यही कहा जा सकता है- 'जम्भसार बिश्नोई पंथ का महापुराण है। यदि साहबराम जी 'जम्भसार' न लिखते तो बिश्नोई समाज का आधा इतिहास लुप्त हो जाता।'[11]

सन्दर्भ ग्रन्थ:-

1. पं. द्वारकाप्रसाद मिश्र 'शास्त्री', संस्कृत सुभाषित रत्नाकर, चौखम्भा संस्कृत सीरिज ऑफिस, वाराणसी (उ.प्र.), सन् 2006, पृष्ठ 133.
2. शशि तिवारी, संस्कृत-लोकोक्ति-कोश, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, सन् 1996, पृष्ठ 90.
3. डॉ. शैलेन्द्र स्वामी, रामस्नेही सन्त स्वामी देवादास: व्यक्तित्व और कृतित्व, जूना रामद्वारा, चाँदपोल, जोधपुर, सन् 2007, पृष्ठ 166.
4. स्वामी कृष्णानन्दजी आचार्य, जम्भसार (प्रथम भाग), श्री जगद्गुरु जम्भेश्वर संस्कृत विद्यालय, मुकाम तह. नोखा, जिला-बीकानेर, सन् 2002, भूमिका।
5. वही, भूमिका (पग)
6. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य (पहला भाग) बी. आर. पब्लिकेशन्स, कलकत्ता, सन् 1970, प्रस्तावना 13-14.
7. वही, मुखबन्ध
8. स्वामी कृष्णनन्दजी आचार्य, जम्भसार (प्रथम भाग), श्री जगदगुरु जम्भेश्वर संस्कृत विद्यालय, मुकाम (बीकानेर), सन् 2002, भूमिका (गपप)
9. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य (दूसरा भाग), बी.आर. पब्लिकेशन्स, कलकत्ता, सन् 1970, पृष्ठ 943.
10. स्वामी कृष्णानन्द जी आचार्य, जम्भसार (द्वितीय भाग), श्री जगद्गुरु जम्भेश्वर संस्कृत विद्यालय, मुकाम (बीकानेर), सन् 2002, पृष्ठ 339.
11. डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई (सं.), अमर ज्योति (माह-नवम्बर, 14), बिश्नोई सभा, हिसार, सन् 2014, पृष्ठ 29.

- डॉ. शैलेन्द्र स्वामी
व्याख्याता (हिन्दी)
राजकीय संस्कृत महाविद्यालय
जोधपुर (राजस्थान)

अथर्ववेद में पर्यावरण संरक्षण हेतु मानवीय गुण

किसी भी सभ्यता और संस्कृति की विजय तथा दीर्घकालिक अभ्युदय पर्यावरण की स्थिति एवं समृद्धि पर निर्भर है। इसके लिए उस समाज के व्यक्तियों को ऋत, तेज, ज्ञान, आत्म-प्रकाश जैसे गुणों का विकास, यज्ञ करना, पशु, प्रजा व वीरों का वर्धन करना चाहिए।[1] मनुष्य में सत्य, ऋत, तेज, संकल्प-तप, ज्ञान तथा त्याग जैसे गुण होने आवश्यक है। इन गुणों से ही पृथ्वी के पर्यावरण को सुरक्षित रख सकता है।[2] मानव जब सर्वश्रेष्ठ ऋत को बोलता है अर्थात् उसके अनुसार आचरण करता है तब द्यातापृथ्वी निन्दनीय पापों से तथा संरक्षण के साधनों से रक्षा करती है।[3] वरूण देवता की घोषणा है कि वे जिस नियम को बनाते हैं उसको कोई नहीं तोड़ सकता, चाहे वह दास हो अथवा आर्य। वरुण के नियमानुसार आचरण कर मानव कुछ गुणों के कारण ऋषि और देव कहलाने लगता है और पर्यावरण का संरक्षण करता है तथा कुछ अवगुणों को अपनाकर अर्थात् वरूण के नियमों का अतिक्रमण कर दानव, दस्यु या राक्षस बन जाता है तथा पर्यावरण का विध्वंस करता है।

पृथ्वी की रक्षा मानव के 'अस्वप्नाः' अर्थात् आलस्य रहित होने पर तथा प्रमादरहित होने पर ही हो सकती है। देव यज्ञकर्त्ता को चाहते हैं, आलसी मनुष्य को नहीं चाहते। आलस्य छोड़ने वाले ही विशेष आनन्द देने वाले सोम को प्राप्त करते हैं -

"इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।"
यन्ति प्रमादमतन्द्र॥

अथर्ववेद में वृद्धावस्था तक दीर्घायु की प्राप्ति के लिए मानव को यत्न करते हुए नियमों में रहने का निर्देश दिया गया है। यदि वह नियमों का पालन करेगा तो पर्यावरण समृद्ध होगा और दीर्घ जीवन के लिए पूर्ण आयु तक जाने की संभावना होगी।[4] पर्यावरण संरक्षण हेतु आवश्यक है कि मानव सदा अपने भीतर सद्गुणों का विकास करता रहे और उत्तम बनने का प्रयास करता रहे भूयासमुत्तमः।[5] देवगुणों से सम्पन्न आर्य ही आसुरी गुणों से पृथ्वी के पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले अनार्यों का विनाश कर सकते हैं।[6] पर्यावरण प्रदूषण पाप कर्म का फल है इससे पीड़ा उत्पन्न होती है अतएव पवित्र 'पवमानः' व समर्थ 'शुक्रः' मनुष्य ही पर्यावरण का संरक्षण कर सकता है।[7]

पर्यावरण के विभिन्न घटकों में इतनी क्षमता होती है कि ये अन्य पर्यावरण के तत्त्वों से होने वाले हानिकारक प्रभावों से मानव की रक्षा कर सकते हैं। अथर्ववेद में कहा गया है कि आदित्य द्युलोक से मेरी रक्षा करे, भूमि में अग्नि रक्षण करे। इन्द्र और अग्नि आगे से रक्षण करे, अश्विनौ अन्दर से सुख दें। गौ-तिरछे की रक्षा करें। भूतों को बनाने वाला जातवेद अग्नि मेरी सब ओर से रक्षा कवच हो।[8] पर्यावरण के अन्य घटक भी मानव के रक्षक होते हैं।[9] अतएव मानव को पर्यावरणीय घटकों को प्रदूषित अथवा नष्ट करने का आत्मघाती प्रयास नहीं करना चाहिए।

मानव अपना धन समाज के हित में लगाने के लिए तत्पर रहे। इस उद्देश्य से अथर्ववेद में कहा गया है कि जो मनुष्य देवकार्य के लिए अपना धन सर्म्पण करता है और ऐसे समय में अपने पास -

धन रोक कर नहीं रखता, उसी को विशेष धन प्राप्त होता है।[10] धन प्राप्त करने के व्यवसायों में बहुत निन्दनीय दोष होते हैं, अतः पर्यावरण का संरक्षण करते हुए धन कमाना चाहिए जिससे निर्धनता न हो।[11] धनार्जन का कारण यज्ञ था क्योंकि यज्ञ में बहुत धन व्यय होता है। यज्ञ का संबंध पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन से है, अतः स्पष्ट है कि अथर्ववेद का मानव पर्यावरण के संरक्षण व संवर्धन के लिए धनी होना चाहता था। अपने इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए उसने अथर्ववेद के 16.3 सूक्त के अनुसार निम्न गुण विकसित किये जो उसे पर्यावरण मित्र बनाते थे -

1. **तेजस्विता**- उसने शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि और आत्मा को तेजस्वी बनाने का प्रयास किया, जिससे पर्यावरण को नष्ट या दूषित करने के बुरे भाव उसके पास न आए।
2. **बुद्धि**- आर्थिक विकास और पर्यावरण के विकास

में समन्वय स्थापित करने के लिए बौद्धिक शक्ति का विकास करता था।

3. यज्ञ- सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए मानव का आर्थिक विकास आवश्यक है।[12] आर्थिक विकास पर्यावरण के विकास पर अवलम्बित है और पर्यावरण का विकास यज्ञ पर अवलम्बित है अत: वह यज्ञ करता और यज्ञमय जीवन जीता था।

4. धर्म की धारणा- मानव धर्म को धारणा करता था, जिसके अंतर्गत समाज, राष्ट्र व पर्यावरण की धारणा सम्मिलित है। इन सभी गुण एवं कर्त्तव्य प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण का संरक्षण एवं परीक्षण करते हैं। अतएव मानव को इन्हें जीवन में धारण करना चाहिए।

उपर्युक्त गुण एवं आचरण मानव ज्ञान एवं मानव युक्त हृदय से ही कर सकता है।[13] तत्पश्चात् पर्यावरण मानव के अनुकूल हो जाता है। सूर्य दिन में मानव को संतप्त नहीं करता, बल्कि रक्षा करता है। अग्नि पृथ्वी में उपद्रव करके मानव को संतप्त नहीं करता, शुद्ध वायु अंतरिक्ष से मानव की रक्षा करता है। यम मनुष्यों से और सरस्वती पृथ्वी से उत्पन्न पदार्थों से रक्षा करती है। दिन रात्रियों व सब गुणों से सुख प्राप्त करता है।[14]

अथर्ववेद में ऐसी कामना की गई है कि मानव की वाणी, अंतकरण कर्म एवं चिन्तन मधुर हो।[15] ऐसे मधुर भाव से युक्त मानव का पर्यावरण से संबंध भी मधुर ही होगा और वह पर्यावरण संरक्षण को विशेष महत्त्व देगा।

पर्यावरण रक्षण हेतु ज्ञान और विज्ञान में मानव का युक्त होना आवश्यक है। अथर्ववेद के अनुसार यदि मानव को पर्यावरण संबंधी ज्ञान होगा तथा पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने का विज्ञान होगा तभी पर्यावरण संतुलित रह सकेगा। इसके लिए उसे सावधानी व जागरूकता रखनी होगी। प्रमादवश यदि कोई मानव कहीं त्रुटि कर दे तो पर्यावरण चेतना से युक्त अन्य मानव को पर्यावरण की रक्षा करने के लिए प्रयास करना चाहिए।[16]

पर्यावरण का असंतुलन व प्रदूषण मानव के लिए मृतकारी है और इससे बचने का उपाय वेदों ने ज्ञान का कवच 'ब्रह्मवर्म[17] बताया है। ज्ञान के कवच से युक्त होकर और सर्वदर्शक देव के तेज और बल से युक्त होकर मानव वृद्धावस्था तक वीर्यवान होता है।

विविध कर्मों से युक्त होकर सहस्रायु: अर्थात् पूर्णायु होकर दैवी या मानुषी कारण से अकाल मृत्यु को प्राप्त नहीं होता।[18] जहां यह ज्ञान और जीवन के लिए सुखमयी मर्यादा की जाती है। वहां गाय, घोड़ा, पशु और मनुष्य सब कोई जीवित रहता है।[19]

अथर्वशिर उपनिषद[19] ने स्पष्ट रूप से कहा है कि देवगण स्वयं पृथ्वी, आकाश अथवा स्वर्ग किसी की रक्षा में समर्थ नहीं है, अत: अथर्ववेद[20] ने कहा कि इस जगत में पर्यावरण रक्षण हेतु मानव को स्वयं सावधान व जागरूक होना पड़ेगा।

सन्दर्भ :

(1) अथर्ववेद-16.8.1
(2) सत्यं बृहद्रतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ: पृथ्वी धारयन्ति। -वही -12.1.1
(3) ऋग्वेद - 1.185.10
(4) अथर्ववेद-20.18.3., ऋग्वेद 8.2.18
(5) 'आ रोहतायुर्जरसं वृणाना' अनुपूर्व यतमाना यति स्थ। तान् व स्त्वष्टा सुजनिमा सजोषा: सर्वमायुर्नयतु जीवनाय॥ 10.18.6
(6) अथर्ववेद - 6.15.3
(7) वही 3.31.2
(8) वही - 19.16.2
(9) वही - 19.17.27
(10) अथर्ववेद - 7.51(52).6
(11) वही - 5.11.7
(12) वस्योभूयाय वसुभान् यज्ञो वसु वांशीषीय वसुमान् भूयासं वसु भयि धेहि॥ वही - 16.9.4
(13) मूर्धाहं रयीणां मर्धा समानानां भूयासम्-वही16.3.1
(14) बृहस्पतिर्म आत्मा नृमणा नाम हृद्य:। -अथर्ववेद-16.3.5
(15) सूर्यो माह: पात्वग्नि: पृथ्वीव्या वायुरन्तरिक्षाद् यमो मनुष्येभ्य: सरस्वती पार्थिकवेभ्य। वही-16.4.4
(16) अथर्ववेद - 8.1.13
(17) यत् ते नियानं रजसं मृत्यो अनवधर्ष्यम। पथ इमं तस्माद् रक्षन्तो ब्रह्मास्मै वर्म कृण्मसि। वही - 8.2.10
(18) अथर्ववेद - 17.1.27, 28
(19) सर्वो वै तत्र जीवति गौरश्व: पुरुष: पशु:। यत्रेदं ब्रह्मन क्रियते परिधिर्जीवनाय कम्॥ वही-8.2.25
(20) अथर्वशिर उपनिषद् - 6; (21) अथर्ववेद - 8.1.13

- शारदा देवी, शोधछात्रा
V.V.B.I.S. & I.S.
Hosiarpur Sadhu Aashrm

बधाई सन्देश

सुरेश सुपुत्र श्री हंसराज भादू निवासी गांव रावतखेड़ा ने गाजियाबाद में आयोजित राष्ट्रीय शूटिंग बाल प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ की टीम का नेतृत्व किया व आपकी टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। अब आप 16 दिसम्बर को कोलहापुर में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगे। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई व आपके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

अनूप गोदारा सुपुत्र श्री जगदीश गोदारा कानूनगो निवासी फतेहाबाद ने गैट 2015 की परीक्षा उत्तीर्ण की है। जिसमें इनका पूरे भारत में 1506वां रैंक प्राप्त किया है। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई व आपके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

सृष्टि बिश्नोई सुपुत्री श्री हनुमान सिंह जाणी, निवासी सीसवाल, जिला हिसार ने 10+2 परीक्षा परिणामों में 91.8% अंक प्राप्त कर बोर्ड मेरिट में स्थान हासिल कर समाज का नाम रोशन किया है। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई व आपके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

दीक्षा बिश्नोई सुपुत्री श्री विश्वामित्र गोदारा, एडवोकेट, निवासी गांव सदलपुर ने सीबीएसई की 10वीं कक्षा की परीक्षा 94% अंक प्राप्त कर समाज का नाम रोशन किया है। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से बहुत बधाई।

अभिषेक बिश्नोई सुपुत्र श्री अरुण कुमार बिश्नोई, निवासी तह. रावतभाटा, जिला चित्तोड़गढ़ (राज.) ने 10वीं कक्षा में 90.67% अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया है। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से बहुत बधाई।

अजयपाल सुपुत्र श्री राधेश्याम डेलू, निवासी भाणा, तह. आदमपुर, जिला हिसार ने 10वीं कक्षा 10 CGPA अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से बहुत बधाई।

सरोजबाला सुपुत्री श्री रोहताश कालीराणा, निवासी सदलपुर, तह. आदमपुर, जिला हिसार ने 10वीं कक्षा 10 CGPA अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से बहुत बधाई।

भगवान कृष्ण के तीन रूप

कृष्ण अव्यय पुरुष हैं, कृष्ण वैश्वानर हैं, कृष्ण विष्णु के अवतार भी हैं, जगद्गुरु भी हैं। अनेक रूप हैं कृष्ण के। वासुदेव के पुत्र हैं, तत्त्व रूप कृष्ण हैं, घट-घट के अन्तर्यामी हैं। हमें तय करना है कि हमें किस कृष्ण को पाना है। उसी के अनुरूप मार्ग पकड़ना होगा। कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, बुद्धियोग हम किसी भी मार्ग से जाएं, वे मिल ही जाएंगे। सभी मार्ग उनके पास ही पहुंचते हैं। "गीता ग्रन्थ नहीं, कृष्ण की वाणी है। कृष्ण हमारे भीतर हैं।"

'ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।'

तब क्या गीता हमारे भीतर नहीं है? समझने के लिए अर्जुन बनना पड़ेगा। हर कार्य की अपनी पात्रता होती है। जितना बड़ा पात्र उतना ही ज्ञान ग्रहण कर सकते हैं। पात्र को बड़ा भी किया जा सकता है।

"अभ्यासेन तु कौन्तेय" कह गए।

अभ्यास शुरू होता है संकल्प से। संकल्प मन का बीज है। अभ्यास के साथ यही वृक्ष बन जाता है। संकल्प ही पत्ते, फूल-फल में प्रवाहित रहता है। संकल्प यदि कृष्ण से जुड़ा है तो कृष्ण ही भीतर प्रवाहित रहेंगे। जो भी संकल्प होकर भीतर प्रवाहित होगा, वही मेरा ईष्ट होगा। बिना किसी संकल्प के माता-पिता के प्राण तो प्रवाहित रहेंगे।

"मातृदेवो भव, पितृदेवो भव"।

दोनों ही मेरे प्राकृतिक ईष्ट तो हैं ही। कृष्ण मेरे ईष्ट तब बनेंगे, जब मैं मीरा बनूं। शरीर भले नर का हो या नारी का हो, हृदय तो स्त्रैण होगा, तभी कृष्ण उसमें बसेंगे। वे काले हैं, कृष्ण हैं, ढूंढना पड़ेगा अंधेरे दिल में। वे इतने सूक्ष्म भी हैं कि कण-कण में बसते हैं। विशाल इतने हैं कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उनके भीतर समाया है।

कृष्ण गीता का उपदेश दे रहे हैं और अर्जुन के हृदय में बैठकर स्वयं ही सुन भी रहे हैं। अतः गीता हर मानव पर स्वतन्त्र रूप से लागू होती है। इसमें देश-काल का प्रभाव नहीं रहता।

कुछ उदाहरण मानुष कृष्ण के -

1. 'ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्यम्यशेषतः' ॥7.2॥
- विज्ञान सहित इस ज्ञान का उपदेश मैं तुझको दे रहा हूँ।
2. 'निश्चयं शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम्' ॥8.4॥
- त्याग के विषय में मेरा निश्चय क्या है, यह सुना।
3. 'कर्त्तव्यानिति मे पार्थ! निश्चितं मतमुत्तमम्' ॥8.6॥
- उनको बुद्धिपूर्वक ही करना चाहिए, यह मेरा निश्चित मत है।

कुछ उदाहरण ईश्वर कृष्ण के-

1. 'अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्' ॥4.7॥
- जब अधर्म का उत्थान होता है तब मैं अवतार लेता हूं।
2. 'ये यथा माँ प्रपद्यन्त्ये तांस्तथैव भजाम्यहम्' ॥4.11॥
- जो जिस रूप में मेरे शरणागत होते हैं, मैं उनको उसी रूप में सेवन करता हूँ।
3. 'पिताहमस्य जगतो माता धाता पिता महः' ॥9.17॥
- इस सारे जगत का पिता मैं हूँ। माता, धाता, पितामह भी मैं ही हूँ।

अव्यय कृष्ण के उदाहरण-

1. 'अजोऽपि सत्रव्ययात्मा भूतानानीश्वरोऽपि सन्' ॥4.6॥
- मैं अजन्मा हूँ, निर्विकार हूँ। मैं सबका आत्मा हूँ। पांच महाभूतों का मैं ईश्वर हूँ। ऐसा होते हुए भी समय-समय पर अवतार लेता हूँ।
2. 'यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः' ॥7.3॥
- जो बड़े-बड़े सिद्ध योगरत हो रहे हैं उनमें भी कोई ही ऐसा होता है जो मुझको वास्तविक रूप में तात्त्विक रूप में पहचानता हो।
3. 'मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन् गर्भं दधाम्यहम्' ॥14.3॥
- सारे जगत का निर्माण करने के लिए मेरी योनि महत् ब्रह्म (बुद्धि) है उसी में मैं गर्भाधान किया करता हूँ।

गीता के कुछ श्लोक ऐसे भी हैं जहाँ मनुष्य एवं ईश्वर

दोनों में सामजस्य प्रतीत होता है। उदाहरण के लिए :-

1. 'मम देह गुड़ाकेश ! यच्चान्यदृष्टमिच्छसि' ॥11.7 ॥

हे गुड़ाकेश (अर्जुन) ! मेरे इस विराट शरीर में और भी जो कुछ देखना चाहते हो, देखो।

2. एवंरूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥11.48 ॥

इस रूप का दर्शन इस मनुष्य लोक में तुम्हारे अतिरिक्त हे कौरव वंश के वीर ! कोई नहीं देख पाएगा।

कहीं-कहीं मनुष्य और अव्यय आत्मा में कहा गया अस्मत् शब्द मनुष्य भाव को जोड़ता हुआ आ रहा है:-

1. 'येन भूतान्यशेषेण द्रक्षस्यात्मन्ययो मयि' ॥4.35 ॥

यह चक्षु मैं तुमको देता हूँ। जिससे सारी प्राणी मात्र को अपने आप में देखोगे और मुझ में भी देखोगे।

2. 'न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः' ॥2.12 ॥

मैं पहले कभी नहीं था, ऐसा भी नहीं है, न तुम पहले कभी थे, ऐसा नहीं है। सब सदा-प्रकृति के चक्रमण्डल में पैदा होते हैं, मरते रहते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि गीता में कृष्ण के तीन प्रकार समझने चाहिए।

1. वासुदेव-मानुष रूप-योगेश्वर कृष्ण।
2. ईश्वर-परिमेष्ठी/ गोलोकवादी-दिव्य कृष्ण।
3. शुद्ध परब्रह्म, सबके हृदय में वास करने वाले, अव्यय पुरुष नाम के गीता कृष्ण।

❒ गोविन्द खीचड़
गांव सोनड़ी, धोरीमन्ना, जिला बाड़मेर (राज.)
मो. 9784814736,
govindbhishnoi04@gmail.com

आइआइटी प्रवेश परीक्षा में परचम फहराने वाले होनहार

अभिमन्यु बिश्नोई सुपुत्र श्री छबीलदास धायल, निवासी गांव सीसवाल हाल निवासी एडीशनल मण्डी, आदमपुर मण्डी, जिला हिसार ने जेईई एडवांस्ड 2015 की परीक्षा में 360 में 288 अंक अर्जित कर 189वां रैंक लेकर कर आइआइटी में अपना प्रवेश सुनिश्चित किया है। अभिमन्यु ने 10+2 की नॉन-मेडिकल की परीक्षा 96.2% अंकों से उत्तीर्ण की है। एक किसान परिवार में पैदा हुए अभिमन्यु मेधावी होने के साथ-साथ अत्यन्त ही होनहार व परिश्रमी विद्यार्थी है। आप एनइएसटी 2015 में भी 19वां रैंक प्राप्त कर चुके हैं। अपने अध्ययन काल के दौरान अनेक राष्ट्रीय परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में भी आपने परचम लहराया है। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

संजय कुमार सुपुत्र डॉ. सुखीराम सिगड़, निवासी मंगाली सुरतिया, हाल निवासी लांधड़ी, जिला हिसार ने जेईई एडवांस्ड परीक्षा 2015 के परीक्षा परिणाम में 360 में 233 अंक अर्जित कर 2922वां रैंक प्राप्त किया है। संजय ने 10+2 नॉन मेडिकल की परीक्षा 95.8% अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

सूचना

सभी पाठकों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि आपकी समुचित मांग का ध्यान रखते हुए बिश्नोई सभा, हिसार ने अमर ज्योति का जन्माष्टमी विशेषांक प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। यह अंक अगस्त-सितम्बर का संयुक्त अंक होगा। संयुक्त अंक होने के कारण अगस्त 2015 का अंक प्रकाशित नहीं होगा।

- सम्पादक

संसदीय लोकतन्त्र और पर्यावरण का प्रश्न

गतांक से आगे....

'सेक्युलरिज्म' यूरोप को संगठित करने का एक बड़ा साधन था। उस समय जब यूरोपीय समाजों को बाँधे रखना कठिन होता जा रहा था, 'सेक्युलरिज्म' के आधार पर पूरे यूरोप को जोड़ने का कार्य सम्पन्न किया गया।

भारत में 'ज्ञानोदय' की सीखों का प्रचार-प्रसार उन्नीसवीं सदी में उपनिवेश काल के प्रभाव और दबाव में होता है। यह प्रचार-प्रसार राजा राममोहन जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के हाथों से सम्पन्न हुआ था। इन व्यक्तियों ने भारतीय समाज में तथाकथित रूप से व्याप्त कुछ कुरीतियों का विरोध किया था। पर ध्यान से देखने पर यह सहज ही समझ में आ सकेगा कि यह विरोध एक विशेष दृष्टि को विस्थापित करने और उसके स्थान पर एक और दृष्टि को स्थापित करने के लिए किया था। वहाँ भारतीय जीवन-दृष्टि के परिशोधन की चेष्टा नहीं थी, 'ज्ञानोदय' की यूरोपीय दृष्टि को स्थापित करने का प्रयास था इसलिए उसका भारतीय समाज की वास्तविकता से वैसा गहन सम्बन्ध नहीं था, जैसा कि इन प्रयासों में से सहज ही निकल आती है। धर्मपाल किसी विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रधानाध्यापक नहीं रहे। उन्होंने लन्दन में बीस वर्ष रहकर अंग्रेजों के भारतीय समाज विषयक अनेक सर्वेक्षणों को बड़ी सूक्ष्मता से अध्ययन किया। उसके आधार पर कुछ निष्कर्ष निकाले, जिन्हें कुछ पुस्तकों में सर्वेक्षणों की रपटों के साथ प्रकाशित किया। यह बहुत बड़ा काम था, क्योंकि भारत के समाज का 18वीं, 19वीं सदी का चित्र जो आज हम सब तथाकथित पढ़े-लिखे लोगों के मन में है, उसका आधार या तो ठोस आँकड़ों पर आश्रित नहीं है या वह अंग्रेजों का लिखा ऐसा भारतीय इतिहास है (जो दुर्भाग्य से हमारे वामपंथी इतिहासकारों का प्रियतम स्रोत है), जो भारतीय समाज को नीचा दिखाने के लिए लिखा गया था। यह उपनिवेशवाद का एक ऐसा अनिवार्य लक्षण है, जो लगभग अदृश्य रहकर समूचे उपनिवेशित समाज का मनोबल गिराने की चेष्टा करता है और जिस पर स्वतन्त्रता के बाद हमें सचेत भारतीय नागरिक होने के कारण ध्यान देना था और अपनी सभ्यता पर हुए असत्य के लेपन को दूर करने की बौद्धिक चेष्टा करनी थी, पर हम इसके ठीक विपरीत अंग्रेज इतिहासकारों -नृतत्त्वशास्त्रि-भारतविदों के तैयार किए असत्य मार्ग पर ही चलते रहकर अपने-आपको गौरवान्वित और अपने समाज को निरन्तर लांछित करते रहे। फ्रांस के क्वॉद लेवी स्ट्रॉस-जो पिछली सदी के शायद सबसे प्रभावशाली नृतत्त्वशास्त्री रहे-ने इसके ठीक विपरीत अपने जीवन-भर संसार-भर में फैले जन-समुदायों के अध्ययन के बाद कहा कि पश्चिमी सभ्यता पृथ्वी के चेहरे पर फेंकी गई निष्टा है, 'वेस्ट इज द शिट ऑन फेस ऑफ अर्थ!' इसके बाद भी हमारे अध्येता पश्चिम का हाथ थामने, उससे दिशा-निर्देश लेने से बाज नहीं आते।

इसके ठीक विपरीत धर्मपाल उन बिरले इतिहासकारों में थे, जिन्होंने अंग्रेजों के शासन के ठीक पहले, उसके शुरूआती दौर के भारतीय समाज-सम्बन्धी ठोस आँकड़ों को ढूँढ़ा। इंग्लैंड में बीस वर्ष से लगभग गरीबी में रहकर कार्ल मार्क्स की तरह की डबलरोटी के टोस्ट कोट की जेब में रखकर 'इंडिया ऑफिस पुस्तकालय या ब्रिटिश संग्रहालय' जाकर, वहाँ बैठकर, इन आँकड़ों को हाथ से कॉपियों पर उतारा (उन दिनों 1960 के दशक में फोटोप्रति की व्यवस्था नहीं थी) साथ ही उसका विश्लेषण किया। उन आँकड़ों में उन्होंने पाया कि सन् 1842 तक भारत में शिक्षा के जो केन्द्र थे-उन्हें स्कूल कह सकते हैं-उनकी संख्या बहुत थी। तीन अलग-अलग सर्वेक्षणों से जो सन् 1836, सन् 1842 तक स्वयं अंग्रेज प्रशासन के कराए थे-यह तथ्य सामने आता है कि इस देश के लगभग सभी अंचलों में हर तीन गाँवों के बीच दो स्कूल थे। इसका विश्लेषण कर धर्मपाल जी ने यह पाया कि उस समय तक यहाँ हर बारह-तेरह छात्रों के लिए एक शिक्षक उपलब्ध था। शिक्षक और छात्रों में सभी जातियों के लोग थे। कई स्थानों पर सत्तर प्रतिशत छात्र-छात्राएँ उन जातियों के थे, जिन्हें उन्नीसवीं सदी में आकर अंग्रेज अध्येताओं की मेहरबानी से 'दलित' कहा जाने लगा। शिक्षक लगभग अस्सी से अधिक जातियों से

आते थे। धर्मपाल जी ने यह अध्ययन भी किया कि भारतीय गाँव का कामकाज, कैसे चला करता था? यहाँ ऐसी कौन-सी व्यवस्थाएँ थीं, जिनके कारण यह समाज, अंग्रेजों के पहले तक, कमोबेश सुचारू रूप से चलता था। आप चीनी यात्रियों के संस्मरण पढ़ लीजिए या जापानी और कोरियाई यात्रियों के संस्मरण देश जाइए, आप कहीं नहीं पाएँगे कि भारतीय समाज में व्यापक युद्ध या गृह-युद्ध की स्थिति रही है या कि यहाँ का समाज आन्तरिक उथल-पुथल से असन्तुलित था। अगर ऐसा था, तब तक जो इस समाज को चलाने के लिए कुछ ऐसी व्यवस्थाएँ रही होंगी, जिनसे सारा समाज लगभग सहिष्णुता से साथ रहा आता है। ये व्यवस्थाएँ क्या थीं? क्योंकि बिना व्यवस्थाओं के समाज का अनेक स्तरीय संचालन सम्भव नहीं होता। इन व्यवस्थाओं का भी धर्मपाल जी ने अध्ययन किया, उनके कुछ पहले ऐसा ही कुछ अध्ययन वासुदेवशरण अग्रवाल ने भी किया था। उन्होंने भारत के एक विशेष काल-खंड पर अद्‌भुत पुस्तक लिखी है-'पाणिनीकालीन भारत'। मेरा यह आग्रह है कि इस पुस्तक को सभी संस्कारी भारतीयों को पढ़ना चाहिए। 'पाणिनिकालीन भारत' में जिन समाजिक व्यवस्थाओं का रूप निकलकर सामने आता हे, उनमें लोकतान्त्रिक (जहाँ 'लोक' का आशय केवल मनुष्य समाज न होकर पशु-पक्षियों और वनस्पतियों का व्यापक लोक है) भावना भी है, पर वह हमारी अपनी वर्तमान लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं से नितान्त भिन्न थी। राजा को राज्य नियम और समूह-नियम दोनों की मान्यता आवश्यक थी। किन्ही सम्प्रदायों के भीतर जो नियम-कायदे चल रहे हैं, जो अनुष्ठान आदि चल रहे हैं, उनमें हस्तक्षेप का अधिकार राजा को भी नहीं था। यह बहुत बड़ी बात है और इससे राज-सत्ता और समाज के बीच के सम्बन्ध के स्वरूप का अनुमान होता है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि वह अलग तरह का सम्बन्ध है और तब भी वह लोकतान्त्रिक है।

धर्मपाल जी की महत्त्वपूर्ण खोज यह है कि उन्होंनें निर्णायक रूप से यह दर्शाया कि यहाँ की राजस्व व्यवस्था केन्द्रीकृत नही थी। वह हमेशा से 'विकेन्द्रित' रही है। राजस्व का जो धन गाँव के स्तर पर एकत्र होता था, उसमें से अधिकांश गाँव में ही रह जाता था, उससे गाँव के सार्वजनिक कार्य हुआ करते थे। एकत्र हुए राजस्व का केवल कुछ भाग ही जनपद स्तर पर जाता था। वहाँ के बाद और थोड़ा भाग राजधानी तक जाता था। इस तरह गाँव आदि राजसत्ता के अनुदान पर निर्भर नहीं थे। उन्हें पता होता था कि जो धन राजस्व के रूप में उनसे लिया गया है, उसी से उनके अपने सार्वजनिक लोक कार्य सम्पन्न हो रहे हैं। राजाओं के पास या राजखजाने में कभी भी बहुत अधिक सम्पत्ति एकत्र नहीं हो पाती थी। राजा का यह दायित्व था कि हर बारह वर्ष बाद अपने अंचल या अंचल के निकट होने वाले कुम्भ में अपना सारा भी उनका खजाना खाली कर दे। वे यह कार्य हर बारह वर्षों में करने के कृतसंकल्प थे, इसलिए भी उनका खजाना आवश्यकता से अधिक समृद्ध नहीं हो पाता था। इसलिए भी लोक पर उनका अतिशय दबाव नहीं बन पाता था। राजा श्रीहर्ष के कुम्भ-दान के विविध वर्णन मिलते हैं। उसमें यहाँ तक है कि राजा अपना सारा धन कुम्भ में दान करने के बाद अपनी बहन से एकमात्र वास्त्र ग्रहण करके ही राजधानी लौटता था। इसका एक आशय यह है कि कुम्भ के विषय में हमने यह जो धारणा बना रखी है कि, 'यह धार्मिक मेला है', अपर्याप्त है। यह दरअसल पारम्परिक रूप से सामाजिक सम्मेलन था, जिसे 'सोशल काँग्रेस' कहा जा सकता है। यह हमारी सीमा है कि हमारे आधुनिक विमर्शों में इन सब महत्त्वपूर्ण सम्मेलनों और उनमें होते सामाजिक कार्यों पर न तो पर्याप्त ध्यान दिया गया है और न उसका पर्याप्त विश्लेषण किया गया है। हमारे वामपन्थी इतिहासकार इस सबको 'धार्मिक' की कोटि में डालकर ही प्रसन्न होते रहे हैं या उन्होंने भारतीय समाज की इन सब महत्त्वपूर्ण परिपाटियों पर ध्यान देना उचित ही नहीं समझा। शायद इसलिए हम आधुनिक स्वतन्त्र भारत की सामाजिक प्रक्रियाओं में इन परिपाटियों का पुनर्निवेश नहीं कर पाए।

लेकिन प्रश्न यह उठता है कि आखिर पर्यावरण की देखभाल संसदीय लोकतन्त्र के भीतर क्यों नहीं हो सकती? इसका कारण यह है कि संसदीय लोकतान्त्रिक व्यवस्था अनिर्वायत: केन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था, केन्द्रीकृत राजस्व व्यवस्था और केन्द्रीकृत सम्प्रभुता की रचना करती है। यही इसकी असली गति है। इसमें मंत्री आदि सबसे अधिक शक्ति सम्पन्न होते हैं। कोई अपने को

वास्तव में 'लोक का सेवक' नहीं मानता। यह मानने का नाटक वे कितना ही क्यों न करते रहें, पर उन पर ऐसा मानने का दवाब वर्तमान संसदीय लोकतन्त्र नहीं डाल सकता। इसका यह अर्थ नहीं है कि यह फौजी शासनतन्त्र या साम्यवादी नौकरतन्त्र कर सकता है। वे तो यह बिलकुल नहीं कर सकते, क्योंकि उन तन्त्रों में तो केन्द्रीकरण पार्टी के सदस्यों या फौजी शासकों के हाथों में सिमटकर रह जाती है। वे तंत्र संसदीय लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं के विकल्प नहीं, शर्मनाक विकृतियाँ हैं। इन सभी व्यवस्थाओं में दैनन्दिन निर्णय लेने का अधिकार साधारण लोगों के हाथ से निकल जाता है और चूँकि पर्यावरण स्थानीय हुआ करता है, इसलिए बिना स्थानीय साधारण लोगों के हस्तक्षेप के उसे बचाना या संरक्षित करने की चेष्टा करना न, सिर्फ अव्यावहारिक है, बल्कि लगभग असम्भव है। आखिर एक बड़ी कंपनी, वह राष्ट्रीय हो या अंतर्राष्ट्रीय, किसी विशेष स्थान के पर्यावरण को संरक्षित रखने की कोशिश क्यों करेगी? देश की संसद को भी आखिर उन अंचल के सौन्दर्य और समृद्धि का कोई भी अनुभव कैसे होगा? और हमारी शासकीय नई पंचायतें? वे होते हुए भी नहीं हैं। सारे बड़े निर्णय विधानसभाओं और संसद में होते हैं, जिसके प्रतिनिधि पूरे 'लोक' यानी उस इलाके के मनुष्यो, पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों आदि का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। करते भी हैं तो आधे-अधूरे प्रतिनिधियों की इन सभाओं में बोलने का अवसर ही नहीं होता। होता भी है तो वे किन्ही कंपनियों के दलालों की तरह व्यवहार करते हैं, जिससे उनका अपना लाभ हो सके। इसी सबको जानकर गाँधी जी ने लोकतान्त्रिक व्यवस्था के एक और बेहतर रूप पर प्रस्ताव दिया होगा। वह कांग्रेस के पदलोलुप नेताओं को स्वीकार नहीं था। वे स्वतन्त्रता संग्राम में दिए गए अपने 'जीवन का मूल्य' चाहते थे। मूल्य एक ही तरह प्राप्त किया जा सकता था- राजसत्ता की भागीदारी से। पर उस प्रस्ताव से ऐसा नहीं होनेवाला था।

अब हम गाँधी जी के प्रस्ताव पर लौटते हैं। उन्होंने इसे 'ओशेनिक' सिद्धान्त कहा था। उनके इस सिद्धान्त में लोकतन्त्र का एक प्रारूप प्रस्तावित था। इस सिद्धान्त के अनुसार शासन व्यवस्था का स्वरूप वैसा ही होना चाहिए, जैसा कि पानी में पत्थर फेंकने से उसमें उठी लहरों का होता है। जब आप कोई पत्थर पानी की सतह पर फेंकते है। उससे एक तरंग उठती है, यह तरंग एक और तरंग को जन्म देती है, वह एक और तरंग को, इस तरह पत्थर से अनेक तरंगें निरन्तर उत्पन्न होती चलती हैं। गाँधी जी पत्थर के स्थान पर ग्राम्य समुदाय को रखते थे। ग्राम्य समुदाय या शहरी समुदाय पंचायतें चुनेंगे। ये चुने हुए लोग फिर अपने बड़े स्तर के आगे के यानी जनपदों, जिलों के प्रतिनिधियों की चुनेंगे और ये लोग अगले स्तर के प्रतिनिधियों को चुनाव करेंगे। इस तरह प्रभुता का स्त्रोत जन-समुदाय होंगे, वे संसदीय लोकतन्त्र की तरह सम्प्रभुता या राजनीतिक अथॉरिटी के विषय नहीं होंगे, उसका स्त्रोत होंगे। जो निर्णय सामुदायिक स्तर पर लिए जाएँगे, उन्हें ही एक के बाद दूसरे बड़े स्तर के निर्णयों का अनिवार्यत: आधार बनाया जाएगा। इस तरह जो देश की तमाम स्थानीय आवश्यकताएँ हैं, वे राष्ट्रीय योजनाओं का नियमन करेंगी। इस तरह की शासन व्यवस्था प्रारूप में स्थानीय स्थितियों, पशु-पक्षियों, वनस्पतियों, वनों आदि का भी ध्यान रखा जाना अनिवार्य हो जाएगा। अगर आपको यह स्मरण हो कि भारत में 'लोक' का अर्थ केवल मनुष्य समुदाय न होकर समूचे पर्यावरण और उसके बीच रहते मानवीय समाज से है, आप समझ पाएँगे कि गाँधी जी के द्वारा प्रस्तावित 'ओशेनिक सिद्धान्त' में समूचे लोक का हित सम्भव होगा। अपने इसी विचार का विस्तार करते हुए गाँधी जी से 29 जनवरी, 1948 यानी अपनी मृत्यु से केवल कुछ घण्टों पहले कांग्रेस के नए संविधान का अन्तिम प्रारूप तैयार किया था। उसे उन्होंने देर रात अपने सहयोगी प्यारेलाल जी को दे दिया था कि वे उसे कांग्रेस के प्रमुख नेताओं तक पहुँचा दें। इस प्रारूप में कांग्रेस को राजनीतिक दल नहीं रह जाना था। उसे लोक सेवक संघ में परिवर्तित होकर गाँवों और शहरों में पंचायतीराज लाने और अन्य सामाजिक कार्यों में सहयोगी होना था। हम जानते हैं, वैसा नहीं हो पाया। इसी का परिणाम है कि आज हम लोकतन्त्र के अत्यन्त पिटे हुए रूप, संसदीय लोकतन्त्र को उपयोग में ला रहे हैं और उसका विकल्प खोजने की चेष्टा नहीं करते। इसी के फलस्वरूप तमाम 'लोक' यानी मनुष्य और उसका पर्यावरण इतनी कठिन स्थिति में आ गए हैं।

अब मनुष्य का प्रकृति से 'पवित्र' सम्बन्ध बनना

कठिन है। एक तरह से मनुष्य पवित्रता के घेरे से बाहर आ गया है, उसका स्वयं को प्रकृति का अंश मानने का अब कोई मार्ग निकलता नहीं जान पड़ता। पर नए जैव वैज्ञानिक अनुसन्धान मनुष्य और प्रकृति के आत्यन्तिक और परस्पर निर्भर सम्बन्ध को निरन्तर अन्वेषित और उद्घाटित कर रहे हैं। ऐसी ही एक पुस्तक है-'व्हाट गुड आर बग्स'। इसके लेखक हैं-गिल्बर्ट वॉल्डवॉउर। ये जाने-माने जैव वैज्ञानिक हैं और अपनी इस पुस्तक में उन्होंने विस्तार से यह बताया है कि जीवन-जाल किस सूक्ष्मता से बुना गया है और कैसे उसमें छोटे-से-छोटा जीव, उदाहरण के लिए खटमल भी, कैसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनके अनुसार यह विराट बुनावट है, ऐसा महाकाव्य, जो जीवन नाम से पृथ्वी पर बुना गया है, जिसका हर पात्र प्रमुख पात्र है। इस महाकाव्य की बुनावट आधुनिक उपन्यास की तरह नहीं है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि अगर किसी भी जीव को, खटमल हो या गौरेया, तितली हो या मच्छर हटा दिया जाए, यह जीवन-जाल एकाएक ढह जाएगा। उन्होंने तितली का उदहारण देकर बताया है कि यह किस तरह होगा। छोटी-सी तितली पेड़ से निकल रहा मधु पीती है, उसका यह मधु पीना भी इस व्यापक जीवन-जाल का महत्त्वपूर्ण अंश है। पेड़ में लार्वा रखने के लिए एक दूसरा कीड़ा उसमें छेद करता है और एक कठफोड़वा आकर 'लार्वा' खाने के लिए जब उस छेद में चोंच मारता है, उसमें से रस बाहर आता है, यह रस लार्वा के पोषण के लिए काम आता है। इस तरह यह जाल परस्पर निर्भरता के सहारे व्यापक होता चलता है। इसी पुस्तक में लेखक ने यह भी बताया है कि केवल एक ही जीव ऐसा है, जिसको हटाने से इस समूचे जीवन-जाल पर कोई असर नहीं पड़ेगा। यह एकमात्र जीव ही ऐसा जीव है, जो मानों इस जीवन-जाल के संदर्भ में अतिरिक्त है। यह अतिरिक्त जीव मनुष्य है। इस अर्थ में मनुष्य को इस व्यापक जीवन-जाल में निरन्तर अपनी अपरिहार्यता खोजनी पड़ती है। यह तभी तो सकेगा, जब वह कोई ऐसी लोकतान्त्रिक व्यवस्था या व्यवस्थाएँ बनाएगा, जिसमें न केवल उसकी, बल्कि व्यापक जीवन-जाल की अत्यन्त भंगुर उपस्थिति का बोध हो। मुझे नहीं लगता कि यह स्वभाव से ही मनुष्य-केन्द्रित और प्रकृति के प्रति प्राचीन और पारम्परिक समाजों में व्यवहृत अन्य लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं को सामने रखकर कुछ नया या नए राजनीतिक दर्शनशास्त्र/शास्त्रों को अन्वेषण करना होगा, जहाँ स्थानीय स्तर से उच्च स्तर तक सभी लोगों की-जिसमें विचारवान लोग भी हों और वे भी, जिन्हें ऐसा नहीं माना जाता-की भागीदारी हो। यह केवल सदिच्छा से सम्भव नहीं है, इसके मूल में जैविक आत्मनिर्भरता के नए जैव वैज्ञानिक अनुसन्धानों को मनुष्य की प्राचीन अलौकिक छवि के निकट लाना होगा; क्योंकि इन दोनों में ही उसे इस व्यापक प्रकृति के अंश की तरह परिकल्पित किया गया है। इन दो ज्ञान परम्पराओं के संवाद पर ही किसी नई राजनीतिक व्यवस्था की पीठिका रखी जा सकेगी और पर्यावरण हमें एक-दूसरे से सहज जीवन जीने का अवसर दे सकेगा।

संदर्भ : लेखक एवं सम्पादक 'समास' हिन्दी प्रत्रिका, सम्पर्क : एफ 90/45 तुलसी नगर, भोपाल-462003 (म. प्र.), फोन: 0755-2556940, (यह व्याख्यान सागर विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में 'अनुपस्थिति' की 'उपस्थिति' व्याख्यान माला के अन्तर्गत दिया गया था)

- श्री उदयन वाजपेयी
एफ 90/45, तुलसी नगर, भोपाल (म.प्र.)

दान सुपाते बीज सुखेते

छबीलदास सुपुत्र श्री ओमप्रकाश धायल निवासी सीसवाल हाल निवासी आदमपुर एवं बिश्नोई सभा, जिला हिसार ने अमर ज्योति पत्रिका को 11000 रुपये दान दिए हैं। अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार उनकी व उनके परिवार की सुख समृद्धि के लिए मंगल कामना करती है।

सफल जीवन

जिसके धर्म आचरण से पुत्र, मित्र और बंधु-बांधव जीवित रहते हैं उसी का जीवन सफल है, अपने लिए कौन नहीं जीता है। जिसकी वाणी रसमय (मधुर) है, पत्नी पतिव्रता है और लक्ष्मी (सम्प्रदा) दानवती है उसी का जीवन सफल है। जिसका यश है वही जीता है तथा जिसकी कीर्ति है वह भी जीता है। बुद्धिमान को उचित है कि दूसरों के उपकार के लिए धन और जीवन तक को अर्पण कर दे क्योंकि इन दोनों का नाश तो निश्चय ही है, इसलिए सत्कार्य में इनका त्याग करना अच्छा है।

जीवन का एक क्षण भी कोटि स्वर्णमुद्रा देने पर भी नहीं मिल सकता, वह यदि वृथा नष्ट हो जाय तो इससे अधिक हानि क्या होगी ? शरीर और गुण इन दोनों में बहुत अन्तर है, क्योंकि शरीर तो थोड़े ही दिनों तक रहता है और गुण प्रलयकाल तक बने रहते हैं। जिसके गुण और धर्म जीवित हैं वह वास्तव में जी रहा है। गुण और धर्मरहित व्यक्ति का जीवन निरर्थक है। वास्तव में उसी का जीवन सफल है जिसके जन्म लेने से वंश उन्नति को प्राप्त होता है।

इस परिवर्तनशील संसार में कौन नहीं मृत्यु को प्राप्त हुआ है और कौन नहीं उत्पन्न होता, जो मनुष्य दु:खित प्राणियों के दु:खों का उद्धार करता है वही इस लोक में परमात्मा है।

उसको नारायण के अंश से उत्पन्न हुआ समझना चाहिए। जिसका चित्त इस अपार चिदानन्द सिन्धु परब्रह्म में लीन हो गया, उससे उसका कुल भी पवित्र हो गया, माता कृतार्थ हो गयी और पृथ्वी पुण्यवति हो गई। जिसने परब्रह्म का साक्षात्कार कर लिया है, उसके लिए सारा जगत नन्दनवन है, सब वृक्ष कल्पवृक्ष हैं। सब जल गंगाजल हैं। उसकी सारी क्रियाएँ पवित्र हैं, उसकी वाणी चाहे प्राकृत हो या संस्कृत, वह वेद का सार है और उसकी सभी चेष्टाएँ परमात्मामयी हैं।

गुरु जम्भेश्वर भगवान ने कहा है कि जीवन में तप, इन्द्रिय संयम, सत्यभाषण और मनोनिग्रह- ये कार्य सबसे उत्तम हैं। मनुष्य को चाहिए कि वह प्रिय-अप्रिय की स्थिति में समभाव रहे, किसी के मर्म में आघात न पहुंचाए, निष्ठुर वचन न बोले क्योंकि वचन रूपी बाण जब मुँह से निकल जाते हैं, तब उनके द्वारा बींधा गया मनुष्य रात-दिन शोक में डूबा रहता है। जीवन में क्षमा, सत्य, सरलता और दया इन दैवी गुणों का अनुपालन करना चाहिए। वेद अध्ययन का सार है- सत्य भाषण, सत्यभाषण का सार है- इन्द्रिय संयम और इन्द्रिय संयम का फल है मोक्ष। यही सम्पूर्ण शास्त्रों का उपदेश है।

❐ **ऋषिराम बिश्नोई (से.नि.)**
पुलिस-उप निरीक्षक
मुरादाबाद (उ. प्र.)
मो. 7351092457

कर्मफल

एक भक्त को विधाता से साक्षात्कार का सुअवसर मिला तो उसने पूछा-'प्रभु मेरे भाग्य में किस प्रकार की मृत्यु है ? "जैसी सबकी होती है-विधाता ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया"। वो तो ठीक है भगवान, परन्तु मेरे भाग्य में मृत्यु का कारण क्या लिखा है ये तो बताइए। भक्त के बालहट को देखते हुए विधाता ने बताया- तुम्हारे भाग्य में पानी में डूबने से मृत्यु लिखी है।

तीन साल व्यतीत हो गए वही भक्त अस्पताल में पड़ा करुण स्वर में विधाता को पुकार रहा था। भक्त का कष्ट देखकर विधाता ने उसे स्वप्न में दर्शन दिए। भक्त ने पुन: प्रश्न किया- प्रभु आपने मुझसे झूठ क्यों बोला ? आपने कहा था कि मेरी मृत्यु पानी में डूबने से होगी, पर ये डॉक्टर तो बोल रहे हैं कि मुझे मुँह का कैंसर हुआ है और कोई इलाज मुझे नहीं बचा सकता। हे भगवान ! यदि आप मुझे आप मुझे सच बता देते कि मेरी मृत्यु कैंसर से होगी तो मैं तम्बाकू, गुटखे व दूसरे व्यसनों में नहीं पड़ता। बताइए प्रभु ! आपने झूठ क्यों बोला ? भक्त की दशा से व्याकुल विधाता बोले- नहीं प्रिय ! मैंने झूठ नहीं बोला। तुमने पूछा था मेरे भाग्य में किस प्रकार की मृत्यु लिखी है। विश्वास करो तुम्हारे भाग्य में डूबने से ही मृत्यु लिखी है- लेकिन तुम्हारी यह दशा भाग्यगत नहीं, कर्मगत है। मैं केवल भाग्य में लिखता हूँ, कर्मफल के लिए व्यक्ति स्वयं उत्तरदायी होता है।

❐ **बजरंग लाल डेलू**
गांव काकड़ा, त. नोखा मो. 9887660821

5 जून, 2015 को अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण मंत्री को बिश्नोई समाज द्वारा दिया गया निवेदन पत्र

केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री श्री प्रकाश जावडेकर को निवेदन पत्र सौंपते अ.भा. बिश्नोई महासभा के संरक्षक श्री कुलदीप बिश्नोई।

प्रतिष्ठा में,

माननीय श्री प्रकाश जावडेकर जी,
पर्यावरण, वन एवं जलवायु मंत्रालय,
केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार,
नई दिल्ली।

आदरणीय महोदय,

'हम आज दिनांक 05 जून 2015 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आयोजित पर्यावरण सम्मेलन में श्री गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन दिल्ली में पधारने पर आपका हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन करते हैं।

महोदय! जैसा कि आपको ज्ञात ही है कि बिश्नोई समाज एक पर्यावरण प्रेमी समाज है। यह विश्व का एकमात्र ऐसा समाज है जिसने अपने पंथ-प्रवर्तक गुरु जम्भेश्वर महाराज के वचनों व शिक्षा की अनुपालन में पर्यावरण रक्षा हेतु अपने प्राण तक न्यौछावर किए हैं। वृक्षों व वन्य जीवों के रक्षार्थ गत पाँच शताब्दियों में अलग-अलग घटनाओं में 450 से भी अधिक बिश्नोई समाज के लोगों ने अपना जीवन न्यौछावर किया है। इस अवसर पर हम इन शहीदों को नमन करते हैं।

महोदय! आज पर्यावरण दिवस पर बिश्नोई समाज पर्यावरण के रक्षार्थ आपसे निम्न निवेदन करता है-

1. गुरु जम्भेश्वर भगवान विश्व के प्रथम पर्यावरणविद् थे, जिन्होंने आज से 550 वर्ष पहले ही पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा दी थी। आज उनकी शिक्षाएं पर्यावरण संरक्षण हेतु रामबाण सिद्ध हो सकती हैं। आपसे निवेदन है कि गुरु जम्भेश्वर जी की जीवनी, वाणी व शिक्षाओं को विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाये, ताकि उनकी कल्याणकारी शिक्षाओं का समुचित प्रचार-प्रसार हो सके।
2. 'खेजड़ी' व हरे वृक्षों की रक्षार्थ बिश्नोई समाज के लोगों ने अनेकश: बलिदान दिया है। जोधपुर जिले के खेजड़ली गांव में सन् 1730 में खेजड़ी वृक्ष के रक्षार्थ 363 बिश्नोई नर-नारियों ने अपना जीवन बलिदान किया था। वृक्ष रक्षार्थ दिया गया यह बलिदान विश्व की अद्वितीय घटना है। अतएव आपसे निवेदन है कि 'खेजड़ी' को राष्ट्रीय वृक्ष घोषित किया जाए। इससे शहीदों का भी सम्मान होगा तथा जनमानस में वृक्ष प्रेम की भावना जागृत होगी।
3. महोदय! इस समय पूरे देश में सड़कों का विस्तार व उद्योगों की स्थापना की जा रही है। इस हेतु बड़ी संख्या में वृक्षों को काटा जा रहा है। आपसे अनुरोध है कि सरकार से आदेश पारित करवाएं कि इन पेड़ों को काटने की बजाय आधुनिक तकनीक द्वारा उन्हें स्थानान्तरित किया जाए।
4. इस समय पूरे देश में नदियों पर प्रदूषण का खतरा मंडरा रहा है। इसलिए सरकार नदियों की सफाई पर विशेष

ध्यान दे रही है। इस संदर्भ में आपसे अनुरोध है कि दिल्ली में चन्दगीराम अखाड़े के पास यमुना नदी पर गुरु जम्भेश्वर घाट स्थापित किया जाये तथा उसके आस-पास का एक कि.मी. का तट बिश्नोई समाज को देख-रेख हेतु सौंपा जाए, जिस पर हर तरह का अधिकार सरकार का ही होगा। हम आपको आश्वासन देते हैं कि इस क्षेत्र को हरा-भरा, साफ-सुथरा करने की जिम्मेवारी बिश्नोई समाज की होगी।

5. वन्य जीवों व पर्यावरण का गहन संबंध है। बिश्नोई समाज एक वन्य जीव प्रेमी समाज है। इस समाज के लोगों ने समय-समय पर वन्य जीवों की रक्षार्थ शिकारियों से लोहा लेते हुए अपने प्राण न्यौछावर किए हैं। इसी का परिणाम है कि आज बिश्नोई बाहुल्य गांवों में हिरणों व अन्य-वन्य जीवों के झुण्ड देखे जा सकते हैं। बिश्नोई समाज अपने स्तर पर तो यह कार्य पूरी शिद्दत के साथ कर रहा है परन्तु सरकार के सहयोग से यह कार्य और अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है, अत: इस संदर्भ में आपसे निवेदन है कि-

(i) जहां-जहां इस समय वन्य प्राणी बहुतायत में है वहां वन्य प्राणी विभाग द्वारा उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। इस हेतु वन्य प्राणी विभाग में कर्मचारियों की कमी पूरी की जाए तथा उन्हें पूरे संसाधन मुहैया करवाये जाएं।

(ii) वाइल्ड लाइफ एक्ट 1972 को और अधिक सुदृढ़ बनाया जाए ताकि शिकारियों में कानून का खौफ रहे।

(iii) वन्य जीवों के रक्षार्थ प्राण न्यौछावर करने वाले जीव रक्षकों को शहीद का दर्जा दिया जाए तथा उनके परिवारों को वही सब सुविधाएं प्रदान की जाए जो एक शहीद सैनिक के परिवार को दी जाती है।

(iv) हिरणों का शिकार करने वाले आवारा शिकारी कुत्तों के बधियाकरण का विशेष अभियान चलाया जाए।

(v) खेतों में फसलों की सुरक्षा में प्रयुक्त धारदार ब्लैड वाले तार वन्य जीवों के लिए अत्यन्त घातक है अतएव पूरे देश में इस प्रकार के तारों को प्रतिबंधित किया जाए।

(vi) कोई भी नया उद्योग या परमाणु संयत्र आदि स्थापित करते समय यह ध्यान रखा जाए कि ऐसी भूमि को अधिग्रहीत किया जाए जो वन्य जीवों से रहित हो। हरियाणा के गांव बड़ोपल में काले हिरणों के लिए 700 एकड़ में संरक्षित क्षेत्र घोषित किया जाए तथा वन्य जीव बाहुल्य इलाकों का भारतीय वन्य जीव संस्थान से सर्वे करवा कर सरकार से संरक्षण नीति बनवाई जाए।

(vii) देश में वन्य जीव अभ्यारण्यों की संख्या बढ़ाकर दुगुनी की जाए।

(viii) राज्यों तथा राष्ट्रीय स्तर पर वन्य जीव संरक्षण से सम्बन्धित सभी सलाहकार समितियों/बोर्डों/ निगमों में बिश्नोई समाज की जीव रक्षा सभाओं के प्रतिनिधियों को शामिल किया जाए।

महोदय! हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि उपर किए गए निर्देशों पर गंभीरता से विचार करेंगे तथा उन पर आवश्यक कार्यवाही करेंगे।

निवेदक

समस्त बिश्नोई समाज

विराट साप्ताहिक जाम्भाणी हरिकथा आयोजित

हिसार: श्री बिश्नोई मंदिर, हिसार में विराट साप्ताहिक जाम्भाणी हरिकथा का आयोजन किया गया। 'बिश्नोई रत्न' स्व. चौ. भजनलाल जी पूर्व मुख्यमंत्री हरियाणा की चतुर्थ पुण्यतिथि पर आयोजित, इस हरिकथा का वाचन शास्त्रों के प्रकाण्ड पंडित स्वामी राजेन्द्रानन्द जी, हरिद्वार ने किया। कथा का शुभारंभ 28 जून को विशाल यज्ञ के साथ किया गया। प्रथम दिवस दीप प्रज्ज्वलन पूर्व विधायिका श्रीमती जसमा देवी द्वारा किया गया। व्यास गद्दी पर आसीन पूज्य स्वामी राजेन्द्रानंद जी ने ज्ञानामृत वर्षा करते हुए कहा कि सत्संग में जाने से मनुष्य का जीवन सफल हो जाता है। सत्संग में मानसिक विकार दूर होते हैं और पापों का शमन होता है। स्वामी राजेन्द्रानंद जी ने गुरु जम्भेश्वर भगवान की परम पवित्र वाणी की व्याख्या करते हुए कहा कि '**ज्यों-ज्यों नाम विष्णु के बीजे, अनन्त गुणा लिख लिजे**'। भगवान विष्णु के प्रति हम जितनी श्रद्धा रखते हैं, भगवान उससे लाख गुणा कृपा अपने भक्तों पर करते हैं।

स्वामी राजेन्द्रानंद जी ने जाम्भाणी हरिकथा में भगवान गुरु जम्भेश्वर के अवतार की पृष्ठभूमि पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि भगवान विष्णु समय-समय पर धर्म की रक्षा के लिये धरा-धाम पर अवतार लेते हैं। ऐसा ही अवतार भगवान विष्णु ने सम्वत् 1508 में भादों वदी अष्टमी को नागौर जिले के पीपासर गांव में भगवान जम्भेश्वर के रूप में धारण किया। भगवान जम्भेश्वर ने भूली भटकी मानवता को धर्म की राह दिखाई थी। उनकी शिक्षाएं मानवता के लिये संजीवनी बूटी है।

स्वामी राजेन्द्रानंद जी ने स्नान के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गुरु जम्भेश्वर जी ने स्नान को सर्वोपरि माना है, क्योंकि इससे तन और मन दोनों की शुद्धि होती है। इसी विषय पर आगे बोलते हुए उन्होंने कहा कि स्नान 3 प्रकार का होता है। सूर्योदय से पहले किया गया स्नान देव स्नान कहलाता है। उसके थोड़ी देर बाद तक किया गया स्नान मानव स्नान और दोपहर को किया गया स्नान दानव स्नान कहलाता है।

उनके इस नियम का कठोरता से पालन करने के कारण ही कई स्थानों पर बिश्नोइयों को स्नानी भी कहते हैं। इसके साथ-साथ उन्होंने विष्णु के नाम जप पर भी बल दिया और बताया कि इस नाम के जाप करने से मनुष्य संसार के बंधनों से मुक्त हो जाता है।

स्वामी जी ने दान की महता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कुपात्र को दिया गया दान हमेशा निष्फल होता है। गुरु जम्भेश्वर भगवान ने सबदवाणी में कहा है-

"दाप सुपाते बीज सुखेते अमृत फुल फलीजे"

अर्थात् सुपात्र को दिया गया दान अमृतमयी होता है तथा फलता-फुलता है। जिस सज्जन पुरुष ने अपनी काया को तपस्या रूपी कसौटी पर लगा दिया हो उस कसौटी-परख में काया खरी उतरी हो तथा मन को एकाग्र कर लिया हो, संतोष धारण कर लिया हो, मन को एकाग्र करके जो ईश्वर ध्यान में मग्न हो गया हो अर्थात् अपने चंचल मन को स्थिर कर लिया हो ऐसे गुणों से सम्पन्न व्यक्ति ही सुपात्र हो सकता है। यही सुपात्र व्यक्ति की परिभाषा है। ऐसे लोगों को दिया गया दान ही अमृतमयी फलदायक होता है। यही बातें हमें गुरु जम्भेश्वर भगवान ने अपनी सबदवाणी में हमें सिखाई है। स्वामी जी ने 29 नियमों का महत्व बतलाते हुए कहा कि गुरु जम्भेश्वर भगवान ने मानव जीवन के सुधार के लिये 29 नियमों की आचार सहिंता बतलायी थी। जिसे अपनाकर मानव अपने जीवन का कल्याण कर सकता है। स्वामी राजेन्द्रानन्द जी ने अपनी मधुर वाणी में गुरु जम्भेश्वर भगवान की जीवन

लीला व शिक्षाओं के बारे में बताया। इस हरिकथा में स्वामी सुखदेव मुनि, स्वामी गोपालशरणानन्द जी आदि ने ज्ञानामृत वर्षा की। कथा में पूर्व उपमुख्यमंत्री चन्द्रमोहन बिश्नोई उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सीमा बिश्नोई सहित समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

उन्होंने समाज से अनुरोध करते हुए कहा कि हमें गुरु जम्भेश्वर भगवान के नियमों पर चलते हुए अपने अमूल्य जीवन का कल्याण करना चाहिए।

सम्पूर्ण आयोजन में अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर सेवक दल का विशेष सहयोग रहा, जिसके लिये सभा प्रधान श्री सुभाष देहडू ने सेवकदल का विशेष रूप से धन्यवाद किया तथा भविष्य में भी इसी प्रकार से सहयोग की अपेक्षा की। 3 जून, 2015 को प्रातः स्व. चौ. भजनलाल जी की पुण्यतिथि पर बिश्नोई मन्दिर, हिसार में विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। यह यज्ञ मुकाम पीठाधीश्वर स्वामी रामानन्द जी आचार्य, स्वामी राजेन्द्रानन्द जी, हरिद्वार, स्वामी राजेन्द्रानन्द जी, महन्त लालासर साथरी, स्वामी सुखदेव मुनि, स्वामी भक्तिस्वरूप जी, गायणाचार्य बनवारीलाल सोढ़ा व अन्य सन्तों द्वारा सबदवाणी के सस्वर पाठ के साथ किया गया। यज्ञ की पूर्णाहुति चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई द्वारा दी गई। इस यज्ञ में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। 3 जून को ही श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें चौ. कुलदीप जी बिश्नोई, विधायक आदमपुर मुख्य अतिथि थे।

चौ. कुलदीप बिश्नोई ने कहा कि 'बिश्नोई रत्न' स्व. चौ. भजनलाल जी एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक संस्था थे। वे युगपुरुष थे। उन्होंने हरियाणा ही नहीं बल्कि भारत की राजनीति को एक नई दिशा प्रदान की थी। राजनीति को जनसेवा का माध्यम मानने वाले चौ. भजनलाल जी ने अपना सारा जीवन आम आदमी की सेवा में व्यतीत किया था। चौ. कुलदीप बिश्नोई ने कहा कि उनका व्यक्तित्व हमारे लिये आलोक स्तम्भ की भान्ति है। वर्तमान समय में चौ. भजनलाल जी की नीतियों और विचारों का महत्व अधिक है। हम सभी को उनके विचारों पर अमल करना चाहिये। पूर्व संसदीय सचिव श्री दुड़ाराम ने कहा कि चौ. भजनलाल जी महान व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने सदैव सिद्धान्तों की राजनीति की थी। इस अवसर पर स्वामी राजेन्द्रानन्दजी ने कहा कि चौ. भजनलाल जी केवल एक राजनेता ही नहीं थे बल्कि बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी और मानवता के प्रतीक थे। मुकाम पीठाधीश्वर स्वामी रामानन्दजी ने कहा कि स्व. चौ. भजनलाल जी एक धार्मिक राजनेता थे। धर्म का पालन उनके लिये पहले था और राजनीति बाद में। बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान श्री सुभाष देहडू ने इस अवसर पर कहा कि बिश्नोई समाज आज जिस मुकाम पर खड़ा है वह चौ. भजनलाल जी की ही देन है। बिश्नोई समाज उनके उपकार से कभी उऋण नहीं हो सकता।

इस अवसर पर बिश्नोई सभा, हिसार के सचिव मनोहरलाल गोदारा, कोषाध्यक्ष राजाराम खीचड़, उपाध्यक्ष श्रीकृष्ण राहड़, अमरसिंह मांझू, हेतराम धारणियां, रामकुमार कड़वासरा, भगवानाराम फुरसानी, कृष्ण बैनिवाल, श्रीमती सरस्वतीदेवी, अखिल भारतीय श्री गुरु जम्भेश्वर सेवक दल के राष्ट्रीय प्रधान सीताराम मांझू, हिसार के प्रधान सहदेव कालीराणा, हजकां नेता रणधीर पनिहार, सुबेसिंह आर्य, श्री गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति के प्रधान जगदीश कड़वासरा, जीवरक्षा सभा के प्रदेशाध्यक्ष कामरेड रामेश्वर डेलू, कामरेड बनवारीलाल, कृष्ण काकड़, के.डी. पंवार, आर.सी. गोदारा (से.नि. न्यायाधीश), श्री रामसिंह (सी. ओ.), मास्टर धोलूराम, बिश्नोई सभा, दिल्ली के प्रधान श्री हनुमान बिश्नोई, बिश्नोई सभा, पंचकूला के प्रधान अचिन्तराम गोदारा सहित समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

श्री आसाराम जी लोहमरोड़, प्रधान टोहाना, श्री

रामस्वरूपजी बेनीवाल, प्रधान रतिया, श्री माखनलाल जी काकड़, से.नि. DETC श्री रिछपाल जी जांगु, संरक्षक गुरु जम्भेश्वर सेवक दल, श्री मखनलाल जी पूनियां, पूर्व चेयरमेन, ब्लाक समिति अग्रोहा, डॉ. सुरेंद्र खिचड़, श्री बनवारी लाल जी ठेकेदार, रामसिंह जी जाणी, श्री राजकुमार गोयल प्रधान गौशाला सदलपुर, श्री हंसराज जाजूदा, फतेहाबाद सभा श्री रामस्वरूप जी सिहाग, श्री राजाराम जी धांगड़, आदमपुर सभा से श्री बुल सिंह बेनीवाल, श्री प्रदीप जी बेनीवाल, श्री रामसिंह जी सहारण (ETO) आदि मौजूद थे।

रक्तदान शिविर आयोजित

हिसार: अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति द्वारा पूर्व मुख्यमंत्री (हरियाण) बिश्नोई रत्न चौ. भजनलाल की चौथी पुण्यतिथि के अवसर पर श्री बिश्नोई मंदिर, हिसार में रेडक्रास तथा महाराजा अग्रसेन चिकित्सालय हिसार के सौजन्य से एक विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

इस शिविर का शुभारम्भ बिश्नोई मंदिर हरिद्वार के स्वामी राजेन्द्रानंद जी महाराज ने स्वयं रक्तदान देकर किया तथा रक्तदाताओं को सम्बोधित करते हुए बताया कि रक्तदान से बढ़कर कोई पुण्य का कार्य नहीं है। इस अवसर पर आदमपुर के विधायक श्री कुलदीप जी बिश्नोई भी उपस्थित थे। उन्होंने रक्तदाताओं को हौसला बढ़ाते हुए कहा कि आप एक जरूरतमंद व्यक्ति को रक्त देकर उसका जीवन बचा सकते हैं। रक्तदान के तीन महीने बाद व्यक्ति का रक्त पूरा हो जाता है। हमें अधिक से अधिक लोगों को रक्तदान देने के प्रति जागरूक करना चाहिए। समिति के प्रधान श्री जगदीश कड़वासरा तथा वरिष्ठ उपप्रधान श्री सुभाष गोदारा ने बताया कि इस रक्तदान शिविर में 106 रक्तदाताओं ने अपना रक्त दिया है। जिनमें लगभग 40 महिलाओं ने भी रक्तदान किया।

उन्होंने यह भी बताया कि समिति बिश्नोई रत्न चौ. भजनलाल की हर पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर का सफल आयोजन कर रही है जिसमें बिश्नोई सभा हिसार का विशेष योगदान रहता है।

इस अवसर पर श्री रामेश्वर बैनीवाल, श्री चौथाराम जी, श्री निहाल सिंह गोदारा, श्री सुभाष सिहाग, श्री बंसीलाल राहड़ तथा डॉ. मदन लाल खिचड़ भारतीय बिश्नोई युवा संगठन के श्री सुमित बैनीवाल भी उपस्थित थे। इस कार्य में श्री प्रेमकुमार बर्तन बाले का विशेष योगदान रहा।

जगदीश कड़वासरा
प्रधान, अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर
कर्मचारी कल्याण समिति

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम सम्पन्न

जोधपुर: गुरु जंभेश्वर जी द्वारा स्थापित चौबीस भंडारों में शामिल गुरु पीठ ग्राम जैसलां (जि-जोधपुर राजस्थान) में 26 अप्रैल, 2015 को स्व. पं. सोहनलाल जी सोढा द्वारा अपने जीवन काल में रचित भक्तिमय पद्य काव्य का दो पुस्तकों "साखी" एवं "नौरंगी-भात" के रूप में प्रकाशन के पश्चात विमोचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 25 अप्रैल की रात्रि में भक्तिमय वातावरण में जागरण का आयोजन हुआ।

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय पब्बाराम बिश्नोई विधायक फलौदी थे। विशिष्ट अतिथियों के रूप में श्रीमती सरस्वती बिश्नोई संरक्षिका, जांभाणी साहित्य अकादमी बीकानेर, डॉ. कृष्ण लाल बिश्नोई, बीकानेर, श्री भागीरथ बेनिवाल प्रधान पं. स. लोहावट, श्री अभिषेक भादू, प्रधान पं. स. फलौदी श्री अशोक बिश्नोई नव चयनित I.A.S. श्री रावल जाणी सदस्य जिला परिषद जोधपुर, भंवरलाल सियोल (कोजा, बाड़मेर) ने उपस्थित होकर दिवंगत कवि एवं संगीतकार पं. सोहनलाल जी को श्रद्धांजलि दी एवं उनके द्वारा रचित पुस्तकों की सराहना की।

- घनश्याम सोढा
वरिष्ठ अध्यापक, जैसलां मो. 9772831429

शहीद हुए 363 बिश्नोइयों की स्मृति में खेजड़ली में बनेगा भव्य स्मारकः प्रकाश जावडेकर

दिल्ली : केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावडेकर ने 5 जून, 2015 को सिविल लाइन्स स्थित श्री गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन में आयोजित राष्ट्रीय पर्यावरण संरक्षण सम्मेलन में भाग लेकर हरे वृक्षों के लिए शहीद हुए शहीदों को नमन किया। इस अवसर पर उपस्थित पर्यावरण प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए श्री जावड़ेकर ने कहा कि शहीदों की स्मृति में गांव खेजड़ली में एक भव्य स्मारक बनाया जायेगा ताकि देश के लोग स्मारक के माध्यम से इन पर्यावरण-प्रेमी शहीदों के बलिदान से परिचित होने के साथ-साथ, वृक्षों को बचाने की प्रेरणा ले सकें।

श्री जावडेकर ने कहा कि प्रकृति की रक्षा को लेकर बिश्नोई समाज की प्रतिबद्धता और बलिदान अतुलनीय है। प्रकृति से अतुलनीय प्रेम और बलिदान देखना है तो बिश्नोई समाज की ओर देखा जा सकता है, जिसके 363 लोगों ने वृक्षों को बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। श्री जावड़ेकर ने कहा कि एक वर्ष में 365 दिन होते हैं, वहीं सन् 1730 में बिश्नोई समाज के 363 स्त्री, पुरुष एवं बच्चों ने वृक्षों की रक्षा के लिए चिपको आंदोलन की शुरूआत करके स्वयं को कटवा लिया, परंतु उन्होंने वृक्षों को कटने नहीं दिया। यह विश्व इतिहास की अद्वितीय घटना है।

श्री जावडेकर ने आगे कहा कि केन्द्र सरकार वन एवं पर्यावरण की रक्षा के लिए एक विस्तृत कार्य योजना तैयार करेगी, जिसे जनता एवं पर्यावरण प्रेमियों की सहभागिता से कार्यान्वित किया जाएगा। राष्ट्रीय पर्यावरण संरक्षण सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीति विश्लेषक डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने कहा कि गांव खेजड़ली में वृक्षों की रक्षा के लिए बलिदान देने वाले 363 बिश्नोइयों के करीब 30 हजार वंशज, यदि लोगों को वृक्ष लगाने और वृक्ष बचाने की मुहिम में जुट जाएं तो पर्यावरण रक्षा की दिशा में एक कारगर कदम होगा। डॉ. वैदिक ने सामाजिक जीवन में शुचिता लाने तथा स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए लोगों से मांसाहार तथा शराब के सेवन को त्यागकर, शाकाहारी भोजन करने की जरूरत पर बल दिया।

अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के संरक्षक कुलदीप बिश्नोई, विधायक आदमपुर ने बिश्नोई समाज की ओर से पांच सूत्रीय मांगपत्र जावड़ेकर जी को सौंपा। सम्मेलन में पूर्व विधायक दूड़ाराम बिश्नोई, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के स्कूल ऑफ एनवायरमेंटल साइन्स के पूर्व डीन प्रो. अरुण कुमार, सेनि. IPS श्री रामसिंह बिश्नोई, बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान श्री सुभाष देहडू, सचिव मनोहर लाल गोदारा, कोषाध्यक्ष राजाराम खिचड़, सेवक दल सचिव मास्टर धोलूराम भादू, श्री मक्खनलाल पूनियां, कोलायत से श्री हुकमाराम खिचड़, सुप्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. एम.एम. जुनेजा, भाजपा हरियाणा उच्च शिक्षा सैल की कोर्डिनेटर प्रो. अनिता शर्मा, कई एडवोकेट्स एवं हजारों पर्यावरण-प्रेमियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। सम्मेलन को जोधपुर के पूर्व सांसद चौ. जसवंत सिंह बिश्नोई,अध्यक्ष केन्द्रीय ऊन विकास बोर्ड के अतिरिक्त हरियाणा के वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी आर.सी. मिश्रा, जीव रक्षा सभा के हरियाणा प्रदेशाध्यक्ष का. रामेश्वर डेलू, राष्ट्रीय अध्यक्ष साहबराम रोज, श्री आर.के. बिश्नोई, दिल्ली ने भी सम्बोधित किया। मंच संचालन बिश्नोई महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामस्वरूप मांझू एडवोकेट ने किया। मीडिया एवं जनसम्पर्क विशेषज्ञ अरुण जौहर द्वारा लिखित पुस्तक '363 वृक्ष मित्रों की शहादत' का विमोचन भी पर्यावरण मंत्री ने किया। श्रीमती संध्या बिश्नोई (दिल्ली) ने मार्गदर्शन में स्कूल के बच्चों ने खेजड़ी की बेटी नामक नाटक का मार्मिक मंचन किया। खेजड़ली बलिदान घटना से सम्बन्धित एक फोटो प्रदर्शनी भी श्री खम्मुराम बिश्नोई, श्री रामनिवास हाणियां व रविन बिश्नोई द्वारा लगाई गई जो लोगों के आकर्षण का केन्द्र बनी रही।

पर्यावरण दिवस की पूर्व रात्रि को विशाल जागरण का आयोजन किया गया। जागरण का शुभारंभ हांसी की विधायक श्रीमती रेणुका बिश्नोई द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। जागरण में लालासर साथरी से पधारे स्वामी सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने मधुर वाणी में आरतियां, साखियां व भजन प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। जागरण में स्वामी भागीरथदास आचार्य जी ने गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। 5 जून को प्रातः स्वामी भागीरथदास जी आचार्य, स्वामी सच्चिदानन्द शास्त्री के सान्निध्य में विशाल यज्ञ का आयोजन कर पाहल बनाया गया। कार्यक्रम में गुरु जम्भेश्वर सेवकदल शाखा, हिसार की सेवा सराहनीय रही। कार्यक्रम के अन्त में गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन के अध्यक्ष श्री हनुमान सिंह बिश्नोई ने सभी पधारे हुए अतिथियों, संतों और विद्वानों का धन्यवाद किया।

– **अरुण जौहर,** मीडिया सलाहकार
अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा
मो. 09878393900

राष्ट्रीय जाम्भाणी संस्कार शिविर सम्पन्न

जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर द्वारा मुक्तिधाम मुकाम में समाज के किशोरवस्था छात्रों के लिए तृतीय राष्ट्रीय संस्कार शिविर का आयोजन ग्रीष्मकालीन अवकाश में 9 जून से 15 जून 2015 तक किया गया है। रहन-सहन की व्यवस्था पंजाब धर्मशाला गुरुमाता हँसादेवी आश्रम में थी, जब खान-पान की व्यवस्था अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर सेवक दल भण्डारे में थी। शिविर के सयोजक स्वामी सच्चिदानंद जी आचार्य, लालासर धाम की इसके आयोजन में विशेष भूमिका रही। शिविर में विभिन्न प्रान्तों व जिलों के सैकड़ों विद्यार्थियों ने भाग लिया।

9 जून को प्रात: पंजीकरण प्रक्रिया के उपरान्त उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादमी के पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य, विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधि तथा सेवक दल के सदस्यों के अतिरिक्त दूर व नजदीक से पहुंचे समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। पवित्र ज्योति प्रज्ज्वलन व बच्चों द्वारा साखी प्रस्तुति के साथ सत्र आरम्भ हुआ। स्वामी सच्चिदानंद जी ने सभी आगुन्तुको का स्वागत किया, महासचिव डॉ. सुरेन्द्र बिश्नोई व श्री विनोद जम्भदास ने शिविर की रूपरेखा तथा कार्यक्रम का विवरण दिया। उद्घाटन समारोह में श्री देवेन्द्र बिश्नोई अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, बीकानेर मुख्य अतिथि थे। इन्होंने अपने सम्बोधन में बच्चों को जीवनोपयोगी व व्यक्तित्व विकास की बाते बताई तथा सत्यनिष्ठा, ईमानदारी व अनुशासन आदि गुणों को धारण करने की प्रेरणा दी। स्मरातल महन्त स्वामी रामाकृष्ण जी व अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर अकादमी उपाध्यक्ष डॉ. कृष्ण लाल बिश्नोई, श्री मोहल लाल लोहमरोड़, बी.डी.ओ., श्री भगवाना राम डेलू, डॉ. मनीराम सहारन, श्री प्रह्लाद रॉय गोदारा, श्री रविन्द्र बिश्नोई, सरपंच मुकाम, श्री शंकरलाल माल, डॉ. मनमोहन लटियाल, श्री हनुमान दिलोइया, स्वामी विद्यानंद जी, स्वामी लाल दास जी, मास्टर छोगाराम सारण, मास्टर कृष्णलाल तरड़, श्री इन्द्रराज जांगू, श्री सरजीत काकड़, श्री दलीप परोपकारी, श्री शिवकुमार देहडू, श्री विष्णुथापन व अन्य महानुभवों ने शिरकत की।

शिविर में बच्चों ने 29 नियमों, सबदवाणी, गुरु जाम्भोजी के जीवन चरित्र, साखी, भजन, आरती, व मंत्रों की जानकारी देने के साथ-साथ योग-प्रणायाम, हवन यज्ञ विधि व विद्यार्थियों की दिनचर्या, कैरियर अवसरों व व्यक्तित्व

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते श्री देवेन्द्र भादू आरपीएस।

विकास के सूत्रों से भी अवगत करवाया गया। विद्वान संतों व समाज के प्रबुद्धजनों ने बच्चों का मार्ग-दर्शन किया। शिविर के दौरान बच्चे प्रात: से सांय तक अति व्यस्त रहते थे। रात्रि का जल्दी सोना व प्रात: जल्दी उठने का सिद्धान्त पालन किया गया। प्रात: उठकर बच्चे नित्यक्रम स्नानादि से निवृत्त होकर पांच से छ: बजे तक योग व प्राणायाम सत्र में भाग लेते थे। जिसमें सिरसा से पहुंचे प्रशिक्षक श्री इन्द्रराज जांगू ने योग-व्यायाम की शिक्षा दी तथा अन्य सत्रों में उन्होंने स्वास्थ्य, भोजन तथा रहन-सहन के विषयों पर प्रकाश डाला। प्रात: व सांय 6 से 7 बजे तक बच्चे मुकाम निज मंदिर प्रांगण में आयोजित हवन में सम्मिलित होते थे। इस संदर्भ में बच्चों ने 10 जून को समराथल मंदिर तथा 13 जून को लालसर साथरी हवन में आहुति दी।

श्री विनोद जम्भदास ने गुरु महाराज के पूरी जीवन चरित्र का वर्णन किया। डॉ. कृष्णलाल ने साहित्यकार व कविजनों, श्री छोगाराम सहारण, वील्हो जी व अन्य संत जनों, सचिव मूलाराम लोल ने '**जीव दया पालण, रूंख लीलो न घावै**' व बिश्नोई शहीदों की गौरवशाली गाथा पर प्रकाश डाला। वहीं पंचकुला से श्री पृथ्वी सिंह बैनीवाल, श्री भगवान राम डेलू, श्री मोहन लाल लोहमरोड़, डॉ. चक्रवर्ती, डॉ. ओम प्रकाश भादू, कमाण्डेन्ट, श्री सुरेन्द्र तथा अन्य वक्ताओं ने विभिन्न संस्कारों व विद्यार्थी जीवन में सम्बन्धित सफलता के सूत्र की जानकारी दी। कर्नल गंगाराम ने सशस्त्र सेनाओं व विशेषकर थल सेना में नौकरी अवसरों के बारे में विस्तार से बताया। अकादमी कोषाध्यक्ष श्री आर.के.बिश्नोई ने कैरियर, पर्यावरण संरक्षण व जाम्भाणी जीवन विधि से बच्चों को अवगत करवाया। प्राचार्य श्री ओम प्रकाश सहारण ने

शिविर में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागी को प्रमाण-पत्र देतीं श्रीमती सरस्वती बिश्नोई, श्री सीताराम मांजू व स्वामी सच्चिदानन्द जी शास्त्री।

शिविर के दौरान पर्यावरण चेतना रैली का आयोजन करते प्रतिभागी।

आधुनिक बुराइयों का ज़िकर किया तथा बच्चों को टी.वी., मोबाइल, क्रिकेट जैसे खेलों पर समय नष्ट न करने की शिक्षा दी। शिविर के दौरान बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान श्री सुभाष देहडू, सचिव श्री मनोहर लाल गोदारा, कोषाध्यक्ष श्री राजाराम खीचड़ व अन्य पदाधिकारी तथा मध्यप्रदेश सभा के प्रतिनिधि भी पहुंचे तथा बच्चों को शुभ कामनाएं दीं। श्री सुल्तान जी धारणिया अध्यक्ष, गुरु जम्भेश्वर गौशाला मुकाम, श्री लाखाराम लोल, श्री बीरबल लटियाल, श्री राम नारायण व कई अन्य बुजुर्गों का भी शिविर में सान्निध्य बना रहा। पर्यावरणविद् श्री खमुराम खीचड़ ने भी शिविर में अपनी उपस्थिति दर्ज की तथा बच्चों के साथ मुकाम मंदिर परिसर में सफाई अभियान चलाने के अतिरिक्त पोलीथीन मुक्त वातावरण बनाने व अन्य विषयों पर बच्चों से विचार सांझा किए।

13 जून की रात्रि को कवि संगोष्ठी का कार्यक्रम रहा जिसमें श्री सुरेन्द्र सुन्दरम, श्री पृथ्वी सिंह बैनिवाल, श्री तेजाराम, अन्य कवियों व कई बच्चों ने कविता पाठ किया। शिविर समापन की पूर्व संध्या पर रात्रि जागरण का आयोजन था जिसमें स्वामी सच्चिानंद, श्री बीरबल राम लटियाल, श्री मोहनदास, श्री सुन्दर दास तथा अन्य संतजनों गायणा चार्यों ने प्रवचन, साखी व भजनों द्वारा धर्म मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। शिविर के दौरान बच्चों ने निबन्ध लेखन, भाषण, गायन, चित्रकला, जाम्भाणी व सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताओं में भाग लिया तथा शिविर से पहले दी गई शिक्षाओं पर आधारित लिखित परीक्षा भी हुई। प्रतियोगिताएं आयोजन में डॉ. मनीराम सहारण का विशेष योगदान रहा।

15 जून के समापन समारोह में अकादमी की संरक्षिका डॉ. श्रीमती सरस्वती बिश्नोई के अतिरिक्त अन्य पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य तथा बड़ी संख्या में अतिथिजन व अन्य महानुभाव उपस्थित थे। डॉ. श्रीमती सरस्वती ने अपने संदेश में बच्चों को बड़ों के प्रति सम्मान, पहनावे पर ध्यान देने तथा अनुशासन पालन के प्रति सचेत किया। स्वामी सच्चिदानंद ने अन्य स्थानों के अतिरिक्त मुकाम धाम में ऐसे संस्कार समारोह हर वर्ष लगाने की इच्छा प्रकट की तथा अखिल भारतीय सेवक दल के अध्यक्ष श्री सीताराम मांझू व पंजाब धर्मशाला के प्रधान श्री सुरेन्द्र सिंह ने ऐसे शिविरों में अपना हर सम्भव सहयोग देने का विश्वास दिलाया। इस अवसर पर श्री सीताराम मांझू ने कहा कि ऐसे शिविर मुकाम में वर्ष में एक से अधिक बार लगने चाहिए तथा प्रतिभागियों की संख्या बढ़नी चाहिए।

समापन अवसर पर सभी बच्चों को प्रमाण-पत्र दिए गए व अतिथिजनों, कार्यकर्ताओं व विभिन्न प्रतियोगिताओं में अव्वल स्थान प्राप्त करने वाले शिविरार्थियों को सम्मानित किया गया। मनदीप गोदारा को सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी का खिताब मिला, अन्य सम्मानित बच्चों में धर्म तरड़, उज्ज्वल डूडी, रितिक देहडू, उमेश कड़वासना, बुद्धाराम गोदारा, पवन कुमार सुथार, हरिराम डेलू, आशीष ज्याणी, लोकेश भाम्भू, अंशुल जोधकरण, कुलदीप डेलू, सुमित भाम्भू, कैलाश भादू, प्रमोद कुमार माल, मोहित गोदारा, हरिओ३म सहारण, सुन्दर ज्याणी, सुखराम बैनीवाल, सतबीर डेलू, अनूप सिंह पूनिया, अमृता डेलू आदि प्रमुख थे। अंत में अकादमी उपाध्यक्ष डॉ. कृष्णलाल ने सभी उपस्थित संतजनों, अतिथिजनों, महानुभावों व बच्चों के प्रति आभार प्रकट किया तथा प्रसाद ग्रहण के साथ शिविर सम्पन्न हुआ। तदोपरान्त जाम्भाणी साहित्य अकादमी की बैठक भी हुई जिसमें भावी कार्यक्रमों पर चर्चा हुई।

– **डॉ. मनीराम सहारण,** सिरसा (हरियाणा)

बिश्नोई मन्दिर हिसार में आयोजित साप्ताहिक जाम्भाणी हरिकथा की झलकियां

कथा वाचन करते स्वामी राजेन्द्रानन्द जी एवं उपस्थित श्रद्धालुगण

कथा के प्रारम्भ में पूजा अर्चना करते श्रीमती जसमा देवी
व स्वामी राजेन्द्रानन्द जी

कथा में सपरिवार आरती करते हुए
पूर्व उपमुख्यमंत्री श्री चन्द्रमोहन जी

कथा के समापन पर विशाल यज्ञ का आयोजन करते
स्वामी रामानन्द जी आचार्य व अन्य संतगण

यज्ञ में आहुति देते चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई व
श्री दुड़ाराम

रक्तदान कर शिविर का उद्घाटन करते स्वामी राजेनद्रानन्द जी

रक्तदात्री को प्रमाण पत्र देते चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2014-2016
L/WPP/HSR/03/14-16

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन की झलकियां

पर्यावरण दिवस के उपलक्ष पर विशाल यज्ञ का आयोजन करते स्वामी भागीरथ दास जी आचार्य व सन्तगण

दिल्ली के महापौर श्री रवीन्द्र गुप्ता को स्मृति चिन्ह भेंट करते बिश्नोई सभा हिसार के प्रधान श्री सुभाष देहडू व श्री साहब राम

सम्मेलन को सम्बोधित करते केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री श्री प्रकाश जावडेकर

सम्मेलन को सम्बोधित करते अ.भा. बिश्नोई महासभा के संरक्षक चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई

केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री को स्मृति चिन्ह भेंट करते गु.ज. संस्थान भवन के अध्यक्ष श्री हनुमान सिंह बिश्नोई

केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री को बिश्नोई समाज की ओर से मांगपत्र सौंपते चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई

श्री खम्मू राम द्वारा लगाई गई पर्यावरण प्रदर्शनी का अवलोकन करते श्री प्रकाश जावडेकर

सम्मेलन में उपस्थित पर्यावरण प्रेमी

DOREX Printers 9896011117

मुद्रक, प्रकाशक श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 जुलाई, 2015 को प्रकाशित करवाकर मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।